शख्स के दो टट्टुओं को हांकते चले आते हैं। इन टट्टुओं पर इस कदर माल लदा था कि वे मारे बोझ के दबे जाते थे ।

मेरे वालिद ने कहा "वाह ! यह तो हमारी उम्मेद से भी ज्यादा असबाब है--दो टट्टू भरपूर लदे हुये हैं इन पर बेशक कुछ गहिरा माल होगा, गो कि उस आखिरी शिकार सा तो नहीं मालूम पड़ता तौभी असामी अच्छा जान पड़ता है" ।

जब वे लोग पहुंचे सौदागर और मेरे वालिद से मुलाकत कराई गई उसने मुझ से कहा "यह आपही के मिहर्बानी का बाइस है कि यह सब मेरा असबाब बच गया और अगर इन बिचारी गठड़ियों को भी अपने माल के साथ आप हिफाज़त से रखवा दें तो आप की बड़ी इनायत और बन्देपरवरी होगी" ।

मैने कहा "बेहतर है -आप जानवरों पर से बोझा उतारिये, और वह देखिये साम्हने असबाब का ढेर लगा है उस पर आप अगर चाहें तो अपनी गठड़ियां रखदेवें" । साहब ! गरोह के लोगों काबर्ताव उस वक्त एक अजीब किस्म का था, उसे देखतेही सब ने समझ लिया कि वह क्यों हमारे खेमे में लाया गया । उनकी वजह में बहशीपन या नाअखलाकी कुछ भी नहीं झलकती थी बल्कि हर एक शख्स उन दोनों मेहमानों के साथ निहायत मुअद्दवाना और खुशअखलाक बर्ताव रखते थे । एक शख्स उसका घोड़ा मलने लगा, दूसरा रसोईं की जगह बनाने लगा, तीसरा शहर से घास लाने गया, और चौथे ने कहा कि जो कुछ आप लोगों को खाने पीने का सामान चाहिये कहिये तो सब ला दिया जावे । थोड़े अरसे में हमने देखा तो उस सौदागर के चेहरे पर रौनक आगई; और खौफ़ और फ़िक्र के तमाम अलामात जाते रहे । वे दोनों, ठगों में बैठ कर अपना अहवाल बयान करने और उनके किस्से कहानियां सुनने लगे । उन्हें मुतलक इस बात का ख्याल न था कि उनके लिये क्या क्या तयारियां होरही हैं और चन्द घण्टों के बाद वे इस दुनियां फ़ानी से मुल्के अदम के मुसाफिर हो जांयगें ।

आठवां पर्व्व।

इस दर्मियान में हमारे वालिद के खेमें में साबिक दस्तूर एक मजमा ठगों का जमा हुआ और हम लोगों को अपना २ काम सुपुर्द किया गया। भटोट का काम मेरे जिम्मे पड़ा और वह सौदागर मुझे सुपुर्द हुआ। अब मुझे आगे के मानिन्द किसी तरह का तअम्मुल न था, मुझे नाम पैदा करने के लिये शिकारों की जरूरत थी ताकि मेरा हाथ अच्छी तरह मँज जाय। जिन लोगों को मैं बहुत कुछ समझता था उनका काम भी मैं देख चुका और अब उनका मुकाबिला करना या उनसे बढ़ जाने की मेरी ख्वाहिश थी। बल्कि मैंने यह नीयत बांधली थी कि जरूर उन लोगों से सबकत लेजाना चाहिये इस मुआमिले में भी मैंने बतौर सूदे के निहायत उमदा काम किया था बल्कि मुझे इस बात का फख्र था कि मैंने बद्रीनाथ जैसे होशियार शख्स की मदद इस फन् में पहुंचाई थी। मशविरा यह ठहरा कि मगरब की नमाज़ के बादही उन सब लोगों का काम तमाम किया जाय।

साहब! हम लोगों के काफिले में एक ठग का लड़का कोई बारह बरस का निहायत खूबसूरत था और माशअल्ला गाना भी उस का एकही था, उस का वालिद भी उस का साथ सारंगी पर देता था। हम लोग मग़रब की नमाज़ के बाद अकसर उसे बुलवा कर उस का गाना सुनते थे और वह ऐसा उमदा गाता था कि उसे हमारे काफ़िले से बहुत कुछ मिल जाया करता था। वह लड़का उस वक्त बुलाया गया और जब उस ने गाना शुरू किया तो सौदागर के पास खबर भेज दी गई कि गाना शुरू है अगर तकलीफ़ न हो तो आप भी आकर जलसे में शरीक हों। खबर पातेही वह मय अपने नौकर के आ पहुंचा यह नौकर निहायत मज़बूत और खूबसूरत जवान था इस के बड़ी बड़ी मोछें और गलमोछें थीं; उसकी बोलचाल से मैंने मालूम किया कि वह मेवाड़ का रहने वाला राजपूत है जहां के बाशिन्दे आली खानदान और ग़ायत दर्जे के बहादुर होते हैं। ज्यों ही वह आकर अपनी जगह पर बैठा मैंने उसे देखा, और मेरी ख्वाहिश ऐसी हुई कि अगर सौदागर के बदले यह मेरे सुपुर्द होता तो बहुत बेहतर होता। यह बद्रीनाथ के हिस्से पड़ चुका था, मगर जब

मैं अपनी और उस की ताकत पर गौर करता तो मुझे पूरा एतकाद होता कि अगर्चे मैं उस के मुकाबले का समझा जाता हूं ताहम् मैं उससे ताकतवर हूं। कुछ देर योंही ख्याल करने के बाद मेरा यह इरादा पक्का हो गया और मैंने बद्रीनाथ से बदला करने की सलाह की।

उस ने आहिस्ते से कहा "जैसी तुम्हारी मर्ज़ी—मगर यह निहायत मज़बूत है ये मारवाड़ी राजपूत चीते के मानिन्द चालाक होते हैं, और जो सच पूछिये तो मुझे अपनी मुकर्ररी इस शख्स पर अनकरीब नापसन्द थी पर क्या किया जावे, अगर मैं नाकामयाब होऊंगा तो बीसियों आदमी उसका काम तमाम करने को तयार हैं। पर क्या तुम अपने तईं उस के मुकाबिल का समझते हो?"

मैंने कहा "हां, मैं मुतलक खौफ नहीं खाता, सिवाय इस के मुझे नाम पैदा करना है सो अगर कुछ खतरा भी आ पड़े तो मैं कुछ परवाह नहीं करता"।

उस ने कहा "जैसी तुम्हारी खुशी, मगर तुम अपने वालिद से इस का ज़िक्र कर लो।" मैंने वैसा ही किया—वह सौदागर उस लड़के के गाने में ऐसा लगा था कि उस ने मुतलक हम लोगों पर ख्याल न किया और वह राजपूत नौकर भी अपने ख्याल में मस्त था क्योंकि वह गाना भी उसी के मुल्क का था।

वालिद ने पूछा "तुम इस काम को बखूबी कर सकोगे? वर्नः इसे मत आज़माओ वह शख्स हथियारबन्द है, और कमर में उसके कटार है; तलवार हो तो कुछ खौफ़ नहीं मगर कटार बुरी बला है शायद तुम ज़ख्मी हो जाओ"।

मैंने कहा "फर्ज़ करिये कि मैं ज़ख्मी हो जाऊं तो क्या मैं इस खौफ़ के बायस इससे बाज़ रहूं? नहीं नहीं इस का ज़िम्मा मुझ पर रहा आप फक़त इजाज़त दे दीजिये; मैं ज़रूर इस में कामयाब होऊंगा"

वालिद ने कहा "बेहतर है जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, मैं तुम्हें बाज़ नहीं रखता तुम को भी नाम पैदा करना है तो बेशक कुछ खतरा उठाना चाहिये। मैं तुम्हारे पासही खड़ा रहूंगा और अगर ज़रूरत पड़ जायगी तो फौरन् तुम्हारी मदद पहुंचाऊंगा"।

अब की मर्तबः "पान लाओ" यही इशारा कायम किया गया। मैंने बद्री-

नाथ से जगह बदल ली और वह मेरी जगह पर जा रहा, मैंने ख्याल किया कि शायद उस नौकर ने हमें शुबहे की निगाह से देखा, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि उस ने कटार को कमर से खोली। शायद यह मेरी खामखयाली हो क्योंकि इतने पर भी जो बगौर देखा तो उसे किसी तरह खतरे का शुबहा न था। वह उठ खड़ा हुआ और फिर कर हमारी तरफ़ देखने लगा। और जब मैंने उसका शहज़ोर बदन जो कमर के ऊपर बरहना था देखा तो मुझे ख्याल हुआ कि मैंने अपनी ताक़त का अन्दाज़ गलत ख्याल किया मगर उस वक़्त वहां से हटना बुज़दिली समझी जाती। इसलिये उस पर खड़े ही खड़े हमला करने का मौका था, मैं उसके पास जा खड़ा हुआ और वालिद की तरफ़ देखने लगा उन्हों ने मेरा मतलब फौरन् समझ लिया कि ज्यों ही मैं अपने मौके पर पहुंचूं इशारा दिया जाय। ज्यों ही मैं उस के पीछे पहुँचा उस ने फिर के मेरी तरफ देखा और मेरे आगे से हटने लगा मैं उसके साथही साथ चला और उसे हटने को मना करने ही को था कि इतने में इशारा दिया गया।

खुदा जाने, एकाद लहमे की देर हो गई या उस ने अपने मालिक की हालत एक निगाह देख पाई या दरहक़ीकत उसे हम लोगों पर कुछ शक हो गया कि कुछ खतरा आया चाहता है, जो हो मैं नहीं कह सकता मगर ज्योंही मैंने उसके गले में रुमाल दिया फौरन् उसने कटार खींच ली। उस वक़्त हाथ ढीला करने से उसने कटार मेरे पेट में मार दिया होता और साथ ही मेरी मौत होती, मगर तो भी वह इतना छटपटाया कि मेरी उस बिसयार ताक़त पर भी उसने अपना एक हाथ रुमाल और गर्दन के बीच में अनक़रीब डाल दिया था। साहब! बयान करने में बल्कि ज्यादा देर लगती है मगर दरहकीकत काम के वक़्त मुतलक देर न लगी। मैं उस वक़्त निहायत खतरे में था मगर किस्मतों से एक ठग ने उसके उस हाथ के पकड़ने की कोशिश की कि जिसमें वह कटार लिये था। इससे दम भर के लिये उसका ख्याल मेरी तरफ से हट गया, गोकि उसका दम आधा घुट गया था मगर उसने ऐसी कोशिश की कि मुझे झटक दिया और ज्योंही उस बदनसीब ठग के पास पहुंचा कि उसने कटार उसके कलेजे में भरपूर पेश कर दिया।

वह तो ज़ोर से चिल्लाकर गिर पड़ा और उसके खून की धार हम दोनों पर पड़ी; इस झगड़े के बीच में मुझे दुबारा उसके गले में रुमाल डालने का मौका मिला और उसकी नरेटी पर मेरे अंगूठे भरपूर बैठ गये; फिर किसकी ताकत थी जो सांस भी ले सके? मरते वक्त उस राजपूत ने बड़ा ज़ोर किया मगर मैंने अपनी गिरफ्त न छोड़ी, वालिद मेरे पास दौड़कर पहुंचे और चिल्लाकर बोले।

"कहां है रस्सी? कहां है रस्सी? यह यों नीं मरेगा। इसके गले में रस्सी डाल कर दो शख्स दोनों तरफ से खींचों"।

"नहीं नहीं" मैने कहा "यह अनकरीब खतम हो चुका, यह मेरा खास काम है इसमें कोई दखल न देवे"। खुश किसमती तो यह थी कि मैं उसे पटक कर उसकी पीठ पर घुटने के बल चढ़ बैठा और वह किसी तरह कटार न चला सका। आखिरकार एक मर्तबः उसने और भी निहायत ज़ोर किया और तब सुस्त होकर पड़ गया, बस यह भी खतम हुआ—यह मेरा दूसरा शिकार था।

मैं उठ खड़ा हुआ और मेरा दम भर गया, जब मैंने उसकी लाश को ज़मीन पर पड़ा देखा तो मुझे मालूम हुआ कि दरहकीकत मैं निहायत खतरे में था और मैंने उस झगड़े से नजात पाई कि जिसमें जान का ख़तरा था मैंने देखा कि मेरे फन् ने उनकी ताकत पर फतहयाबी हासिल की उस राजपूत के बगल ही में उस ठग की लाश पड़ी थी जो मेरी मदद के लिये आया था और जिसे कारी जखम बैठा था। सब लोगों का ख्याल मेरी तरफ इस कदर रुजू था कि कोई भी उस बिचारे की तरफ जो ज़मीन पर मुँह के बल पड़ा कँहर रहा था मुतवज्जह न था।

मैंने कहा "खुदा के वास्ते इसे सीधा करो इसके पेट में ज़खम लगा है, क्या इसके लिये कोई फिक्र नहीं हो सकती?"

मेरे इस कहने पर चंद लोगों ने उसे उलट कर सीधा किया मगर यह साफ ज़ाहिर होता था कि उसके जीने की कोई उम्मेद न थी उसेके ज़खम और मुंह से बराबर खून की धार बहती थी। उसने बोलने की कई बार

कोशिश की मगर कुल बेफायदा हुआ वह फौरन् मरगया। जब मैं उसके साथ झगड़ रहा था मुझे कई मर्तबः ऐसा ख्याल हुआ कि राजपूत की कटार मुझे लगा चाहती है यहां तक कि मै उस्से अपनी तईं बचाने के लिये जहां तक मुम्किन होता अपना बदन दूर रखता मगर मुझे इस कदर जोश था कि अगर कोई ज़ख्म लग भी गया होता तो हरगिज़ मालूम न पड़ता। ताहम् जब मैंने बगल में अपना हाथ लगाया तो कपड़ों पर खून लगने से मालूम हुआ कि मुझे भी कोई ज़ख्म लगा है वालिद ने भी वह खूब देख पाया और चिल्ला कर कहने लगे।

"अल्लाह की पनाह! क्या यह भी ज़ख्मी हुआ! बेटा क्यों मैं तुम्हें कहता न था कि राजपूत से खबरदार रहना! मेरे फर्ज़न्द तुम उसके मुकाबिल्ल के न थे, और अब तूभी ज़ख्मी हुआ अब क्या किया जाय! इतना कह कर वालिद मारे रंज वो अफसोस के बैठ गये।

मैने हाथ से टटोला तो मालूम हुआ कि कोई ज़ख्म नहीं है बलकि दो चार खरोच लग गये हैं सो मैने फौरन अपना कुरता उतारा और उसे दिखलाकर कहा यह देखिये मैं पेश्तर ही कहता था कि वह मुझे कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकता, इस्से क्या होता है? अगर किसी झाड़ी का कांटा भी गड़ गया होता तो शायद इस्से ज्यादा और तकलीफदह ज़खम लगता, मगर यह तो कुछ भी नहीं है"

"शुक्र अल्लाह!" मेरे वालिद ने कहा खैर हुई जो तुम्हें चोट न लगी"(और उस जईफ़ के आंखों से आंसू टपकने लगे) मैं तो इस शख्स का अहवाल देख कर बहुत डर गया था कि खुदा जाने तुमपर क्या हो। अफ़सोस बिचारा! महम्मद यह निहायत वफ़ादार नौकर था"।

"उस सौदागर और राजपूत पर से फौरन् कपड़े उतार लिये गये और उनकी लाशें उस कब्र में डाल दीं गई जो उनके लिये पेश्तर से तयार की गई थी। यह कब्र उस छोटे खेमे में खोदी गई थी जिसमें मेरे वालिद, मैं और चंद दूसरे लोग सोते थे जहां उसे और कोई शख्स देख न सकता था। इस मौके पर लुघाइयों की अकलमंदी और फुर्ती देख कर मुझे निहायत ताज्जुब हु-

था। मै कुछ देर इस लिये ठहर गया था कि अपने उस छोटे से जखम पर पट्टी लगा लूं और नहाकर खून धो डालूं जिस्से मेरा तमाम बदन भर गया था बादजां जब मैं कब्र पर इस उम्मेद से गया कि अभी उसे खुला पाऊंगा तो क्या देखता हूं कि वहां ज़रा भी इस बात का नाम व निशान नहीं मिलता कि कहीं ज़मीन खोदी गई थी। वह मुकाम जहां कब्र बनी थी पीट कर बराबर कर दिया गया और मट्टी से गोबरी करदी गई, फ़क़त नमी तो उसमें थी वर्नः यह कोई न कह सकता था कि कभी यहां इन्सान का हाथ लगा होगा तब मेरा और मेरे वालिद का बिस्तरा उसं पर लगा दिया गया।

मैने बद्रीनाथ से कहा "तो अब हम लोग अपनी पोशाक पहिन कर हाकिम की मुलाकात के लिये चलें। मैने वालिद से पूछा कि क्या आप भी तशरीफ़ ले चलेंगे?"।

उनने कहा "नहीं बेटा मुझे यहां का बहुत कुछ बन्दोबस्त करना है ताकि किसी तरह का फसाद बर्पा न हो, तुम और बद्रीनाथ अपना काम कर चुके सो जाओ कुछ देर तफ़रीह कर आओ" तब चंद ठगों को उन्हीं ने हुक्म दिया और कहा "देखो अपनी तरफ़ ख्याल रक्खो कि तुम्हारी वज़ह तमाम सिपाहियों की सी रहे न कि ठगों कीसी" सो सात आठ ठग उम्दे कपड़े और हथियार सज कर मेरे साथ चलने के। तयार हो गये; तब तक चांद भी रौशन होगया और वह मुअैयन वक्त आ पहुंचा जो कोतवाल ने दरबार के लिये मुकर्र किया था, सो हम लोग शहर को रवाना हुये।

दरहक़ीक़त, साहब! जब हम सभों ने अपनी २ चुनिन्दी पोशाकें निकाल कर पहिनीं तो सब के सब सिपाही क्या निहायत उमदे जवान मालूम पड़ते थे। हर एक की पगड़ी में एक एक फुनगा निकला हुआ था मेरी पगड़ी में निहायत उमदा कामखिया था जिसके कई बल मेरीटोढ़ी के पास से कसे हुये चेहरे को जंगी शान व खूबसूरती बख्शते थे। मेरे हथयार सब एक से एक उमदे थे, मेरी तलवार के मुट्ठे पर सोने का पानी चढ़ा हुआ था और उसकी मियान बैंगनी मखमल से मढ़ी थी और एक निहायत खूबसूरत चांदी की ज़ंजीर उस पर लटकती थी। मेरे कमर में एक काश्मीरी दुशाला था जिसमें कई एक

पेशकब्ज और छुरियां संगे-सुलेमानी के दस्ते और सोनहले काम की खोंसी थी और एक छोटा जम्बिया यानी अरब की कटारी भी गंगा-जमनी काम की उसी में लटकती थी।

मेरे पास सिलहट की बनी गेंड़े की एक ढाल भी थी जिसपर निहायत खूबसूरती के साथ हिन्दोस्तानी तौर पर गिलट का काम किया था उसकी फुलियां सब चांदी की बनी थीं जिन पर सोनहला काम निहायत उमदगी के साथ किया हुआ था। मेरी पोशाक निहायत बारीक मलमल की थी जिसके अन्दर से मेरा बदन झलकता था ज़री का पायजामा भी बहुत उमदा चढ़ा था इन सब पोशाकों से देखनेवाले को मालुम हो सकता था कि मैं निहायत इज्जतदार और ऊंचे दर्जे का शख्स हूं।

बद्रीनाथ और पीरखां की वज़ह मुझ से कुछ कम शानदार थी मगर वे भी सच्चे और भले आदमी जान पड़ते थे जैसे कि मेरे साथ होने चाहिए थे। हम लोग शहर को रवाना हुए और फाटक से गुजर कर कोतवाल की चौरी पर पहुंचे जहां उससे मिलने की उम्मेद थी, या अगर उससे वहां मुलाकात न हुई तो कोई ऐसा शख्स मिल जायगा जो हमें दरबार जाने का रास्ता बतला सकेगा। वहां पहुचने पर हमने कोतवाल को पाया। वह मुसाफिरों की फिक्र छोड़कर दरबार के लिए हम लोगों का हमराह हुआ।

चंद गंदी गलियों और गाय बैलों में से गुजरते हुए जैसा कि अकसर मरहठे गावों में होता है हम लोग आखिरकार एक अजीम वो आलीशान फाटक पर पहुंचे कि जिसके चौगिर्द कितनेहीं सिपाही खड़े थे और बहुतेरे टहल रहे थे। हम लोग अपने उस दोस्त कोतवाल के साथ उन लोगों में से होते हुए आगे बढ़ गए और बादजां दो खुले दालानों में से गुजरने के हम लोग उसपर जा पहुंचे जहां नाच की महफिल सर्गर्म थी। एक भलेमानस शख्स ने पूछा कि आप लोग कौन हैं? कि जिसका जवाब कोतवाल ने यों दिया कि ये लोग इज्जतदार रईस हैं और नवाब साहब की कदम्बोसी चाहते हैं। इस पर मैंने कहा कि हम लोगों ने भी नवाब साहब की नेकनामी और मुसाफिर-परवारी इस कदर सुनी है कि बगैर हजूर की कदम्बोसी हासिल किए उनके मुल्क से

गुजरना निहायत नासाइस्तगी होगी सो हमने ऐसे मोअज्जिज़ शख्स की खिद्मत में हाज़िर होना निहायत वाजिब वो लाज़िम तसौवर किया।

उस ज़ईफ़ शख्स ने कहा मुबारक हो, ऐन खुशी की बात है हमारे नवाब साहब मुसाफिरों की मुलाकात के मुवाफिक और किसी चीज़ से वैसे खुश नहीं होते। चाहे जब वे लोग आवें वे निहायत शौक से मुलाकात करते हैं और इन्शाअल्ला! आप देखेंगे कि आपने इतनी तकलीफ कुछ बेफायदा नहीं उठाई'।

मैंने कहा "मैं इसे हर्गिज़ तकलीफ नहीं समझता बल्कि हमारे ऐसे नाचीज़ लोगों को यह इज्जत आज़ोनादिर हासिल होती है मगर बराह मेंहर्बानी हम लोगों को हूजूर मे ले चलिये"। उसने कहा बहुत अच्छा तशरीफ़ लाइये'।

हम लोग उसके हमराह हुये और चंद सीढ़ियां चढ़कर बालाखाने में वारिद हुये जहां नव्वाब साहब चंद मुसाहबों के साथ रौनक अफरोज़ थे। उनके साम्हने चंद तवायफ़ निहायत खूबसूरत व परीज़ाद साहबाने-मजलिस को अपने फारसी व हिन्दोस्तानी गाने से खुश कर रहीं थीं। उस ज़ईफ़ शख्स ने जो हम लोगों के साथ था कहा कि आप लोग दम भर यहां ठहरें मैं अभी हाज़िर होता हूं, इतना कह कर वह नवाब साहब के पास गया और हमारे आने की अर्ज़ की।

"खामोश" नव्वाब साहब ने कहा और उसे हुक्म दिया कि सौदागरों को हाज़िर करो। नव्वाब साहब के खामोश कहते ही दस बारह शख्सों ने भी यही आवाज़ दी और मजलिस में एक दम सन्नाटा छा गया'।

हम लोग फौरन् एक कोने में जूते उतार कर सुफेद चान्दनी पर से होते हुये नव्वाब साहब के मसनद के पास हाज़िर हुये। मैंने आगे बढ़ कर कंधे पर से अपना कामदार दुपट्टा उतारा और उस में अपने तलवार के कब्जे को रख कर फौरन् नज़र गुज़ारी।

नव्वाब साहब ने फर्माया "कबूल हुआ आप लोग यहां नज़दीक बैठिये। इनशाअल्ला हमआप लोगों के देखने से निहायत खुश हुये और आप लोगों का इस ग़रीब दरबार में आना ऐन मुबारक हो'।

मैंने बसबब अखलाकी के अर्ज़ की कि मुझ नाचीज़ के काबिल यह इज़्ज़त हर्गिज़ नहीं है, मगर उनने न माना सो मैं निहायत मुअद्दब हो कर दो जानू हो बैठा, और अपनी ढाल वो तलवार को आगे इस तौर से रख लिया ताकि उनकी खूबसूरती खूब झलके। बादशा मैं नवाब साहब की तरफ़ मुखातिब हुआ जो मेरे चेहरे और पोशाक को बगौर देख रहे थे।

उन्हों ने फर्माया "माशाअल्ला तुम तो एक बहादुर नौजवान शख्स जान पड़ते हो, कहो तुम कौन हो और ये अशराफ़ शख्स जो तुमारे साथ हैं कौन हैं? मैंने दस्तबस्त अर्ज की कि "ताबेदार फ़कत एक हक़ीर सिपाही और ज़ात का सैय्यद है। मेरे साथ चंद शख्स हैं, यह बंदा अपनी और उन की नौकरी की तलाश में हैदराबाद जाता है। मैं हिन्दोस्तान से आता हूं और ताबेदार के वालिद जो खेमे में हैं, असबाब सोदागरी का लेकर शहर को जाते हैं। और (मैंने बद्रीनाथ और पीर खां की तरफ़ इशारा कर के कहा) ये दोनों शख्स मेरे अज़ीज़ हैं और चूंकि ये दूसरों की बनिस्बत आला दर्जे के हैं इसलिये मैं इन्हें अपने साथ लेता आया ताकि ये भी हुज़ूर की क़दमबोसी हासिल करें"।

उन्होंने फर्माया "बखुशी तमाम मीर साहब! मुझे मज़बूत जवान सिपाहियों का निहायत शौक रहता है। ऐसे लोग तो मुझ जैसे ज़ईफ़ सिपाही के निगाह में दुरे-लासानी हैं। तब उन्होंने एक चोबदार को हुक्म दिया कि उन्हें आगे लाओ सो वे दोनों शख्स भी आगे बढ़कर अदाब बजा लाये और मेरे म्वाफ़िक तलवार की नज़र गुज़ार कर बअदब दो जानू हो बैठे।

मामूली राव रस्म के बाद गवैयों और रण्डियों को हुक्म दिया गया कि वे लोग जलसा शुरू करें सो मुझे दम भर की फ़ुरसत मिली और मैं कमरे और बालाखाने को बगौर देखने लगा।

इस कमरे के तीनों दर मेहराबदार व नक्काशी काम के निहायत उमदे थे और आगे की तरफ़ बालाखाना था जिस्में से होते हुये हम लोग आये थे; इन मेहराबदार दर्वाजों में बेशकीमती गुलेनारी अंग्रेज़ी साटन के परदे पड़े थे जो लपेट कर ऊपर बांध दिये जाया करते थे। कमरा निहायत ऊंचा था और हमारे पीछे की तरफ़ दीवार में उमदा सुनहरी काम किया हुआ था। ऊपर एक

तरफ वरामदे में घने पड़दे टँगे थे जहां से कि मस्तूरात जनानखाने सब कुछ देखते थे और नीचे के लोग उन्हें हर्गिज न देख सकते थे। हमारे साम्हने रण्डियां निहायत नाज़ों अदा से आती जातीं और इश्क़-आमेज़ ग़ज़लों को गा कर भाव बता रही थीं। चंद परीज़ाद गहने और कपड़ों से लकादक उन्हीं के पास बैठी थीं ताकि अपनी पारी पर मुजरा करने को हाज़िर रहें।

नव्वाब यारजङ्ग बहादुर निहायत खूबसूरत और जङ्गी क़दीमी सिपाही थे, मिज़ाज की खुशअखलाकी और तबीयतदारी शायद दर्जे की थी और दक्खिन के रईसों के गोया एक नमूना थे; गोकि दिल्ली के नवाबों के मुआफ़िक तो तकल्लुफ़ न था मगर तौभी चेहरे पर निहायत रोब और दबदबा झलकता था; उस की चमकीली तेज आंखें और दाहिने गाल पर तलवार के निशानात देखने से साफ़ ज़ाहिर होता था कि यह शख़्स जङ्ग में अकसर बहादुरी दिखला चुका है। पोशाक उस की ढाके के सादे मलमल की थी मगर बड़े बड़े मोतियों के माले की चमक से जो उस के गले में पड़ी थी और उस खूबसूरत बेशक़ीमत तलवार के देखने से जो गद्दी पर रक्खी थी साफ़ मालूम पड़ता था कि यह शख़्स निहायत रईस, अमीर और आले दर्जे का हाकिम है।

उन्हींने मुझे कमरे पर निगाह करते देखा और फ़र्माया—

"दोस्त, हम यहां निहायत ग़रीब मुकाम पर हैं, क्या किया जाय? सरकारी हुक्म ज़रूर बजा लाना चाहिये, मकान को शाथ कहां २ लिये फिरें?। तौभी जहां तक मुम्किन् था और जो कुछ सामान इस जंगल में मोहैय्या हो सका उस्से इस कमरे को आरास्ता कर दिया है और पैग़म्बर साहब की बरकत से दिल-बहलाव का सामान भी कुछ हरदम मौजूद रहता है। कहिये आप उस ज़ोहरा के बारे में जो साम्हने बैठी है क्या समझते हैं इस के मुकाबिल गाने या खूबसूरती में शायद कोई जोड़ हैदराबाद में भी मुश्किल से दस्तयाब हो, यह दूसरी जो हनोज़ गा रही है रास्ते में मिली है जब हम लोग यहां आ रहे थे; लेकिन इनशाअल्ला कुछ दिनों के बाद उस के साथ के लिये यह अच्छा जोड़ तयार हो जायगा और हम इन्हें अपने साथ शहर ले जांयगे ताकि अपने दोस्तों को हैरत दिलावें।

तवायफ़ जोहरा ने जब अपना नाम सुना तो मेरी तरफ़ फिर के देखा; उस के देखतेही दिल हाथ से जाता रहा। गोकि वह उतनी खूबसूरत न थी जैसी कि मैं पेश्तर एकाद मर्तबः और तवायफ़ों को देख चुका था मगर तो भी उसका चेहरा गोल और सुडोल था, उस की बड़ी बड़ी आहू सी आंखें मुझ पर पड़ते ही गोया कलेजे के पार हो गईं। उस का देखना कुछ इत्तिफ़ाकिया न था बल्कि वहकुछ देर तक मेरी तरफ एकटक देखती रही। मैं भी उन दिनों नौ-जवान औरखूबसूरत था सो कुछ शर्मिन्दा हो गया। उसने यह देख कर पीछे मुख फेर लिया और अपनी सहेली की तरफ मुखातिब होकर मुसकुराने लगी।

नवाब साहब ने हँस कर फर्माया—"देखिये हमारे तवायफ़ों का दिल न चुराइये। आप तो गज़ब के आदमी दिखलाई पड़ते हैं मैं ख्याल करता हूं कि आप की खूबसूरती कोई सख़्त नुकसान पहुंचाया चाहती है। कहिये कुछ हिन्दोस्तान की खबर सुनाइये, सुनते हैं कि उधर कुछ जंग का सामान है और मरहठे और पिंडारी लोग तैयारियां कर रहे हैं।

मैंने कहा "हुजूर बजा फ़र्माते हैं, उधर ऐसी शोहरत है। हम लोगों ने सुना था कि होलकर या सेंधिया के यहां भरती हो रही है और उनकी लड़ाई फिरंगियों के साथ जल्द होने वाली है मगर हम लोगों ने दक्खिन में अपनी किस्मत आजमाई करना ज्यादा पसन्द किया—क्योंकि सुनने में आया कि जो तनखाह वहां मिलती है वह हम लोगों जैसे सिपाहियों के लिये बहुत कम है, सबब उसका यह है कि उन लोगों का ख़ास एतकाद उस फ़ौज पर है कि जो फरासिसी जेनरलों के मातहत है क्योंकि फकत इन्हीं लोगों से इन अंगरेज़ फिरंगियों का मुकाबिला हो सकता है"।

नव्वाब साहब ने फर्माया "हाँ दियानतदारी के जंग के दिन तो दूर गये, अब अंगरेजों की नौइजादी के साम्हने हिन्द की दिलेरी रोज़ बरोज़ उठी जाती है। खुदा जाने इसका अंजाम क्या हो। हैदराबाद में भी फिरंगियों ने अपना पैर इस कदर जमा लिया है कि अल्लाह जाने वे वहां से हटेंगे या नहीं! वे लोग तिलङ्गाना के उन नालायक काफ़िरों को बकायदा जङ्ग करना सिखला रहे हैं और दरहकीकत उनका लड़ना भी निहायत अजीब वो गरीब है; मगर

हकताला की कुद्दरत लासानी इसवक्त इन लोगों पर हैं उस्की रहमत है"।

मने कहा "मगर एक जाय सब्र की यह है कि फरासीसी और अंगरेज़ दोनों जानी दुश्मन हैं, सो अगर लड़ाई हुई तो खुदा की बरकत से दो में एक ज़रूर मारा जायगा। उसवक्त मौका हाथ आवेगा कि हम लोग सच्चे मोतकिद अपने मुल्क को इन दोनों से बरी करने के लिये अपना सर उठावेंगे"।

उन्होने फर्माया "आप नौजवान, तुंदखूंन लड़कों के मानिन्द बाते करते हैं यह बात हर्गिज़ नहीं हो सकती। हम हैदराबाद के लोग, अंगरेज़ फिरंगियों के निहायत ममनून हैं क्योंकि उन्हीं ने हमे महरठों के लूट और हैदरअली और टीपू के ज़ुल्म से नजात दीहै सो हम लोग उनसे कभी नहीं लड़ सकते, सिवाय इसके मै यह पूछता हूं कि हम लोग लड़ही कर उनका क्या नुकसान कर सकते हैं। देखिये टीपू भी, हार गया, और उसकी तरफ़ का क़िला तो फरासीसियों की मदद और राय से बना था। खुदा पनाह दे! अङ्गरेजों के मुक़ाबिल तो गोया वह मिट्टी की दीवार खड़ी करदी गई थी"।

मैने पूछा"क्या हूज़ूर ने उसे देखा था,,?

उन्होंने फर्माया "यह सब मेरे साम्हने की बात है अगर आपने भी देखा होता तो आपको निहायत ताअज्जुब होता कि क्योंकर वे अंग्रेज़ पलटन वाले अपने अफ़सर के रूबरू बिल्लियों के माफिक छीना झपटी कर रहे थे और मुक़ाबिल में तोप के गोले और बदूकें चल रहीं थीं कि जिनके रूबरू वे लोग जिन्हें हम सिपाही कहते हैं भूसे के माफिक उड़ गये होते। ये लोग दरहक़ीक़त मर्द हैं, अगर हम हिन्दोस्तानी लोग भी उनके मानिन्द लड़े होते तो क्या ये एक बालिस्त ज़मीन भी लेने पाते? इनशा अल्ला! वे हरगिज़ न पाते मगर उसका अफ़सोस करना फ़ज़ूल है। अब सिकन्दर जाह ने अंगरेज़ों से सुलहनामा कर लिया है और हमेशा महल में बैठे रहते हैं, मुलक का तमाम इन्तिज़ाम उन्हीं लोगों के हाथ में सुपुर्द है"।

मैने कहा "तो आप क्या ख्याल फ़र्माते हैं कि शहर में नौकरी की कोई उम्मेद नहीं है"।

उन्होंने फर्माया "हर्गिज़ नहीं! मगर मैं ख्याल करता हूं कि आपको नौ-

करी पानेकी वहां ज्यादा उम्मेद है। हां आप जैसे नौजवान के लिये वहां बीसियों कार खुले हैं शायद आप को फौज़के अफ़सर लोग पसन्द करें, इनशाअल्ला आपको वहां कोई नौकरी मिल जायगी मगर मेरी फिहरिस्त तो तमाम हो चुकी है; और यह भी बहुत कम अगलब है कि आप अपने लोगों से जुदा रहना पसन्द करें"।

मैंने कहा "जी नहीं यह कब मुमकिन् है? ये बिचारे मेरे वगैर इस अजनबी मुल्क में भूखे मर जांयगी; और चूंकि अब मैं इन्हें जमा कर चुका हूं तो मुझे भी ज़रूर है कि शहर तक इन्हें पहुंचा देने का अपना वादा पूरा करूं"।

"खैर तो अब ज़ोहरा का नाच भी देखिये" नवाब साहब ने फ़र्माया "इनशाअल्ला अगर इसने आप का दिल न हिला दिया जैसा कि यह दूसरों का दिल पिघला चुकी है तो बेशक आप का दिल निहायत सख़ होगा"।

जो तवायफ़ अब तक गा रही थी उसे बैठने और ज़ोहरा के खड़े होने का हुक्म दिया गया। उसके घूंघरू मँगाये गये और उसने उन्हें पैरों में बांध लिया। समाजियों ने भी अपने २ साज मिलाये और बाद थोड़ी देर के वह उठ खड़ी हुई। मैं तो उसके बैठने ही पर फ़रेफ़ता था खड़े होतेही हज़ार जान से आशक होगया। वह क़द में लम्बी न थी मगर उसके बदन की बनावट निहायत सुडौल थी उसका पेशवाज निहायत उमदे काम का था जिस्से गरदन के नीचे उस्का तमाम बदन पैर की एड़ी तक ढका था।

यह पेशवाज बैगनी रंग के करेब पर जिसके नीचे बिलायती जाली दी थी बना था, इस पर सोनहले पट्टे की लम्बी बेल निहायत खूबसूरत मालूम पड़ती थी। किनारे पर बहुत चौड़ा पट्टा चारो तरफ़ लगा था जिस पर जरदोजी और मोतियों से उमदी कारीगरी की थी। इसके ऊपर इसी रंग का रूपे का काम किया हुआ एक निहायत हलका आबरवां का दुपट्टा उस ने बांकी अदा से डाला था जो उसके ज़रा भी जुम्बिश करने से हवा में उड़ताथा इस बैगनी दुपट्टे की रंगत उसके गोरे चेहरे पर ऐसी खुलती थी कि उसकी खूबसूरती दूनी मालूम पड़ती और तिसपर उसकी चितवन भरी आखें और भी गज़ब करती थीं।

समाजियों ने सरगम का लहरा छेड़ा और कुछ देर बाद उस के साथ जो खूबसूरत नौजवान लड़की खड़ी थी आहिस्ते २ नाचने लगी। कुछ देर नाच कर वह अपनी जगह पर बैठ गई और ज़ोहरा खुद मानिन्द माह के गोया बादल से निकल कर चेहलकदमी के साथ हम लोगों की तरफ निहायत नाज़ व अदा से बढ़ी। साहब! उसकी नफीस अदाओं का बयान मैं आप से क्या करूं हर लहमें और हर घड़ी में उस्की खूबी नई नई निकलती ही आती थी यहां तक कि मेरा दिल एक दम उसके दाम में आगया। और जब उसने गाना शुरु किया तो मुझपर जैसा कुछ असर हुआ कि आप से क्या अर्ज करूं! खैर पहिले तो उसने आहिस्ते २ कदम उठाया और तब तेज़ नाच कर नाचना बंद किया। तब एक समाजी ने कुछ गुनगुनाना शुरु किया और इसके बाद ज़ोहरा ने एक निहायत उमदा इश्क-आमेज ग़जल छेड़ी।

यह वह गज़ल थी जो मैं निहायत पसन्द करता था। सुनते २ मेरी यह हालत हुई कि मैं उठकर उसके कदमों पर गिर पड़ूं और बिहिश्त की परी समझ कर उसकी परस्तिश करूं। उसकी उस सुरीली तान से मेरे दिल पर कुछ ऐसा नशा होगया कि मुझे अपने आस पास की कुछ भी होश न रही।

आखिरकार उसने गाना बन्द किया और नवाब साहब ने जो मुझे बग़ौर देख रहे थे पूछा "कहिये आपको इसका गाना कैसा पसन्द आया"?

मैंने जबाब दिया "निहायत उमदा मेरा कलेजा तो पानी २ हो गया। खुश किस्मती तो यह है कि मुझे यहां इन लोगों के साथ रहना नहीं है वरन मै तो हो चुका था। मै तो अपना नाम और कार छोड़ कर इसी के कदमों में पड़ा रहता"।

नवाब साहबने फर्माया "आप तो बेवकूफ़ लड़कोंके मानिन्द बातें करते हैं ऐसे ख्यालात को हरगिज़ दिल में जगह न दीजिये इन्होंने योंही कितनेही लोगों को तबाह कर डाला है। ये लोग दौलत की भूखी हैं और इनकी तबीयत हरगिज आसूदा नहीं होती। समुन्दर के माफिक जो डाल दीजिये ये हजम कर जाती है और चेहरे पर सिवाय ज़रासी मुसकराहट के और कुछ नहीं मालूम होता।"

मैने पूछा "क्या इनमें मोहब्बत नहीं होती"? क्या ये इतनी आश्नाये ज़र हैं"?।

"मुतलक नहीं, इन में मोहब्बत का नामोनिशान नहीं मुझे तो इस का तजरुबा खूब हो चुका है, मगर अब दूसरा शगल होना चाहिये, हमारे यहां चन्द नायाब बहुरूपिये यानी भांड़ हैं जो हालही में हिन्दोस्तान से आये हैं। मैंने फ़क़त एक ही मरतबः उन का जलसा देखा और हँसते २ शिकम में बल पड़ गये। आप को तो अकसर उनका मुहावरा होगा मगर मुझे यह नई बात है सो मैं उन्हें बुलवाता हूं"।

मैंने कहा "हुजूर के फरोतनी की तरक्की हो, आप की इसी गुलाम पर ऐन इनायत है जिस के काबिल ये हरगिज़ नहीं है। इनशाअल्ला जहां इस खादिम की किस्मत इसे ले जायगी वहीं हुजूर के नाम और मुसाफिर-परवरी के ज़ाहिर करने में हर्गिज़ काहिली न होगी; देखना चाहिये कि उन सभों ने कौन सा नया शगल हम लोगों के लिये तयार किया है, बेशक कोई हँसी की बात ज़रूर होगी"।

थोड़े अरसे में तीनों भँाड़ साम्हने आये और सलाम करके एक तरफ़ खड़े हो गये। उन में से एक शख्स अजीब तरह से मुंह बना कर आगे बढ़ा कि उस की शक्ल देख कर तमाम मजलिस हँस पड़ी, उस ने कहा कि हुजूर! एक मर्तबः का ज़िक्र है कि हमारे मुल्क में एक निहायत अक़्लमन्द नव्वाब साहब रहते थे जिन्हों ने अपने रियासत का बन्दोबस्त लासानी किया था और जङ्ग में हमेशा फतहयाबी हासिल करते थे अगर हुजूर की मर्ज़ी हो तो गुलाम कुछ उन का अहवाल अर्ज़ करे।

नवाब ने कहा "हां कहो हम लोग सुनते हैं मगर ख्याल रक्खो कि कोई गुस्ताखाना या नाशाइस्त: कल्मा ज़बान से न निकले क्योंकि तुम लोग खानम के हुजूर में हो"।

सभों ने कहा "अस्तग़फ़ूरअल्लाह" और झुक कर चिलवन की तरफ आदाब बजा लाये--फिर बोले कि "खानम् साहबा की रहमत हम पर हो औरअल्लाताला उम्र दराज़ करे और रोज़ बरोज़ इकबाल की तरक्की हो; इनशाअल्ला हम लोगों पर वे करम फरमायेंगी और आज हमारे जामे सोने से भर जांयगे।

अब उन सभों ने तमाशा आगाज़ किया; उनमें से एक तो निहायत बेह-

दगी से कपड़े पहिन कर नव्वाब बन बैठा। किस्सा उस के लड़कपन से शुरू हुआ कि वह क्योंकर ज़नाने में प्यार से पाला गया, वे दोनों भाँड़ कपड़े बदल कर आ गये एक तो उसकी मा और दूसरा दाई बन गया। वह नवाब निहायत नाज़ोनियामत से पाला गया, फिर आवारा होकर सरकश होगया, लोगों ने कहा इसे शैतान लगा है; एक मुल्ला बुलाया गया, और सिहर के पढ़े हुये शरबत पिलाये गये। तब वह चीखने और चिल्लाने लगा मा और दाई को लातों से मार मजलिस के बाहर निकाल दिया और जो कुछ उसके आस पास था सब उलट दिया। इस से जो गड़बड़ और शोर मचा खास कर तवायफों में उस से तमाम मजलिस में गुल खिल उठा।

बस थोड़े ही देर में वे सब फिर जमा हो गये और आगे का तमाशा शुरू हुआ, अब वह लड़का जवान गुस्सवर और तेज मिजाज हो गया। रण्डी शराब, घोड़े और हथियारों से उसे शौक बढ़ा, वह बेपरवाही के साथ एक दम आवारगी और ऐयाशी में ग़र्क हो गया, वालिदैन से नाफर्माबर्दार हुआ और कर्ज़ लेने लगा; दगाबाज़ और चापलूसों ने आ घेरा जो उस का तमाम माल खा पका गये, वह तो शराब कबाब और रण्डियों में एक दम गारत हो गया। यहां तक उन्हों ने उस के जिन्दगी का दूसरा हिस्सा दिखलाया।

अब उसके वालिद का इन्तकाल हुआ—और वह खासा नव्वाब हुआ। बड़े घरका मालिक हुआ, नौकर चाकर हुकुम के ताबे हुये और रियासत का बन्दोबस्त हाथ आया। मुल्क पातेही उसने अपने तमाम पुराने भले बुरे साथियों को निकाल बाहर किया और उन जईफ़ बदमाशों की भरती किया कि जो उसके वालिद की जमा लूट कर खा रहे थे और जो दौलत लूटने में उसके पुराने साथियों से भी एक दर्जा ऊंचा रखते थे। कुछ रोज़ बाद उससे और पासही के एक रईस से कुछ खटपट हुई और दोनों तरफ से जङ्ग के सामान होने लगे!

अब फौज़ का बयान चला कि क्योंकर वे पहाड़ खाते और दर्या सोख जाते थे और क्योंकर नव्वाब साहब खुद उनसे मिलते, गोया नौशा अपनी दुलहिन से मिलने जाता हो या बिजुली बादल से निकलती हो या जैसे ब-

सौती दर्य्या निहायत ज़ोर शोर से उछलती कूदती चलती हो, उसे देखकर सब के सब यों काँपते थे गोया शेर आ गया हो। उसके घोड़े और हथियार का बयान चला कि घोड़ा निहायत चुस्त वो चालाक हरिन सी छलांगे भरता और शेरसी दिलेरी रखता था तलवार भी उसके वालिदके वक़्त की उसके पास थी जो एकही हाथ में भैंसे को ककड़ी के मानिन्द काट सकती थी।

ख़ैर नवाब साहब मैदान में पहुँचे और जङ्ग शुरू हुआ, घोड़ा आगे बढ़ा और साम्हने से दुश्मन का मुकाबिला हुआ—(ये दोनों आदमियों के घोड़े पर सवार हो काठ की शमशेरों से लड़ते थे)—तब तो तलवार पर तलवार टूटने लगीं, नव्वाब का घोड़ा मारा गया। नव्वाब खुद भी गिर पड़े और दुश्मन के हाथ तले आ गये; मगर फिर उठ खड़े हुये और जङ्ग नये सिर से दुबारा शुरू हुआ। तरफ़ैन से नये नये हथियार निकले और आखिर नव्वाब साहब फ़तहयाब हुये। अल्लाह अकबर! फ़तहयाबी हासिल हुई और ग़नीम ने शिकश्त खाई।

अब फ़ौज़ के कैदियों पर जुल्म और जनाने कि लूट शुरू हुई। उनमे एक लौंडी निहायत खूबसूरत, क़द में छोटी, परीज़ाद, नाज़ुकबदन, हरिन सी आखें खूब सूरती में रूम और फिरिङ्गस्तान के नाज़नीयों की सी गिरफ़्तार हुई। वह नव्वाब के कदमों पर गिरपड़ी और नव्वाब साहब का दिल पारा पारा हो गया—कुछ दिनों के बाद निकाह हुआ और दोनों ऐशो-आराम से रहने लगे मगर एक हमसाये रईस के दुख़्तर की खुबसूरती का शोहरा उसके कानों तक पहुंचा। फिर क्या था, तबीयत में आग भड़क उठी और वह पुरानी माशूका फ़रामोश हुई, खैर शादी की सलाह ठहरी और शादी मंजूर हुई, दुलहिन आई, और दोनों महलों मे लड़ाई शुरू हुई। जनानखाने का झगड़ा उन सबों ने इस खूबसूरती से बयान किया कि चिलवन के अंदर से हँसी की आवाज़ दमभर बंद न होती थी।

नव्वाब साहब की निस्फ़ उमर तो योंही गुज़री, लड़के बाले हुये कुछ २ शराफ़त आने लगी और मज़हबी तज़किरों से शौक हुआ, दोचार मुल्ला भी हाज़िरबाशी में रहने लगे जो चापलूसी और खुशामद में उन पुराने साथियों से

कुछ बढ़े चढ़े थे। मगर नव्वाब की ऐय्याशी बातिन में वैसीही कायम थी गोकि ज़ाहिरा में गोशनशीनी इख़्तियार की थी। दुनियां उन्हें नेक वो श्रादिल समझने लगी और उनके दरबार वो इनसाफ़ का बयान हुआ। इनके मुकाबिल इनसाफ़ में सुलेमान, सख़ावत में हातम और अक्लमंदी व हिकमत में लुकमान भी कोई चीज़ न था। ज्यों ज्यों वे लोग इनकी सिफ़त वो खूबियों का बयान करते साहबाने-मजलिस नव्वाब साहब की तरफ़ खुशी की निगाह से देखते वो तारीफ़ करते थे।

फिर नव्वाब साहब निहायत नाँतवानी वो जईफ़ी की हालत में ज़िन्दगी का दम भरते दिखलाई पड़े, बीमारी से हैरान और नीमहकीमों से घिरे हुये पड़े हैं, उनसे ताकत और नौजवानी की दवा की दर्खास्त कर रहे हैं। जनानखाने में बेगमों को तरक्की हुई जाती है जो रात दिन उनकी खुशामद करतीं और उन्हें आगे से भी नौजवान बतलातीं पर तो भी उन की ईमानदारी में फर्क था, मगर उन्हें एक लड़का था जो अपने वालिद से भी सवकद ले जाया चाहता था; शकल में मजनूं, बहादुरी में रुस्तम् था और उसके मुकाबिल उस के वालिद के दुश्मन यों भागते थे गोया आंधी में भूसियां उड़ती हों।

वे जईफ़ नवाब साहब अब रोज़ बरोज़ ज्यादा नातवाँ और चिड़चिड़े होने लगे। उनके वहम और हसरतों का बयान इस तौर से किया गया कि साहबानमज़लिस हँसते २ लोटने लगे आखिरकार नव्वाब साहब का इन्तकाल हुआ और आख़िरी दम में उनको यह उम्मेद थी कि विहिश्त में ७० हूर और हमेशा की नौजवानी उन्हें दस्तयाब होगी।

इतनी नकल करके वे लोग इनाम के लिये आगे बढ़े।

नव्वाब साहब ने फर्माया "कहिये मीर साहब। आपको यह खेल कुछ पसन्द आया? इन लोगों ने तमाशा उमदा किया या ख़राब"?

"अलहम्दुलिल्लाह"। मैने कहा अल्ला के कारखाने अजीब हैं और ये सब खास उसकी कारीगरी के नमूने हैं क्योंकि मैने पेश्तर भी बहुतेरे भांड़ देखे हैं मगर वे ऐसे न थे।

नवाब साहब ने फर्माया "इन्हें उमदा इनाम दिया जायगा—बावजूद हँसी

वो दिल्लगी के इस नकल में नसीहत और तंज़ भी भरा है। बेहतर होता कि आज कल के नौजवान लोग इस से एक किस्म की नसीहत सीखते तो ज्यादा-तर अक्लमन्दी और इनसानियत उन में होती"।

"आमीन्" मैंने कहा "हुजूर का फर्माना बजा है। जब मैंने इसे सुना था तो इसकी तंज़ पर उतना ख्याल न किया था अब बग़ौर ख्याल करने से उसे बे-साख्ती पाता हूं"।

अब ज्यादा हो गई थी सो रुकसत की पर्वानगी ले कर मैं चलने को उठ खड़ा हुआ। मैं तवायफों के पास से गुजर रहा था कि एक बुड्ढी औरत ने मेरा दामन धर कर खींचा और जल्दी से कहने लगी कि "अगर मौका हो तो आप से एक शख्स दो चार बातें किया चाहता है मगर इस बात को दिल ही में रखियेगा मैंने आप से कुछ और भी अर्ज़ करना है" मेरा खून जोश मारने लगा, सो मैंने चटपट एक रुपया उस के हाथ में दिया और चलता हुआ।

नवां अध्याय।

मैं अपने दिल में ख्याल करने लगा कि क्या वह नाज़नीन जो हैदराबाद के रईसों और अमीरों में रह चुकी है मुझ पर आशक हो गई है जो छनौज़ लड़का है और दरबारी कवायदों से मुतलक नावाकिफ़ और बेखब्र है? फिर ख्याल करने लगा कि क्या उसने मेरी पोशाक और शकल देख कर मुझे दौलतमन्द तसौवर कर लिया कि मैं अपनी तमाम हशमत उस के लिये बर-बाद कर दूंगा? येही ख्यालात मेरे दिल में गुज़र रहे थे और मैं बगैर एक लफ़्ज़ बोले अनकरीब अपने खेमें के पहुंच गया था कि बद्रीनाथ ने कहा

"कहिये मीर साहब! आप की ज़ुबान किस ने बंद कर दी? आप कुछ आज के शब की ग़ज़ल के बारे में बात चीत नहीं करते और न कंचनियों ही का तज़किरा छेड़ते हैं? अल्ला जानता है! गोकि यह मुसलमानी कसम है पर तो भी अगर मुझे महम्मद साहब के बिहिश्त में उस कंचनी सी खूबसूरत हूर मिले तो मैं इन्द्र का स्वर्ग छोड़ कर राज़ी खुशी मुसलमान हो जाऊं!। भला

ख्याल तो कीजिये कि क्या उस जईफ़ नव्वाब के पास या इस मरहठे गांव के कफ़स में उस बुलबुल की तबीयत लगती होगी? चाहे आधा हैदराबाद ही क्यों न उस्के कदमों पर हाजिर रहे। अल्लाह जानता है! मैं फिर भी कहता हूं कि उसे उस बुड्ढे खुर्रांट के पास से निकाल ले चलने की ज़रूर कोशिश करना चाहिये, नकि फकत इसी लिये कि रास्ते में उमदा साथ रहेगा मगर इसलिये भी कि ग्राम के वक्त ज़रा दिलबहलाव का सामान उमदा रहा करेगा।

"बेशक" मैंने बेपरवाही से जवाब दिया "तवायफ़ तो निहायत खूबसूरत है और इस में भी कोई शुबहा नहीं कि उसकी तबीयत इस उजाड़ वो गंदे मुकाम पर घबड़ाती होगी मगर उसे यहां से निकालना कोई आसान बात नहीं है, मासिवाय इसके अगर उसे निकालही ले गये तो क्या करेंगें"?

उसने कहा "खैर मैं इसी लिये कोशिश करूंगा कि उसे अपने साथ निकाल ले जाने में क्या मुशकिल है और तुम जानते ही हो कि अगर हमारे पीछे गिरफ़्तारी के लिये कोई जासूस भी छूटेंगे तो उस का और उस के साथ वालों का बन्दोबस्त हम लोग बाआसानी कर सकते हैं?"

मैंने गुस्से से जवाब दिया कि "तुम इस वख़ कच्चे ठग के मानिन्द बातें करते हो अगर उस का एक भी बाल बांका होगा तो मैं आप सभों को छोड़ कर जैसे बनेगा हिन्दोस्तान की तरफ़ रवाना हो जाऊंगा"।

उस ने कहा "नहीं मीर साहब! मैं तो दिल्लगी करता था! आप जानते ही हैं कि मैं औरतों से लड़नेवाला हर्गिज नहीं सिवाय उस हालत के कि जब वे बकायदा हमारे रोज़गार के शिकार हो जावें। अगर उसे निकालना ही है तो वाजिब तौर से निकालना चाहिये, और चूंकि आप के वालिद भी गाने के शौकीन हैं वह कभी इस बात से इनकार न करेंगे कि हम लोग दम भर उस की सोहबत में गाने बजाने से अपनी तबीयत बहला लेवें, सो मेरे इस कहने पर हर्गिज़ लिहाज़ न कीजियेगा और न इस बिचारे दोस्त पर अपनी नाराज़ी रखियेगा"

मैंने कहा "नहीं गोकि मेरा खून उस वख़ बेशक उबल उठा था कि जब आप ने उस पर ठगी का इशारा ज़ाहिर किया था मगर अब मैं नाराज़ नहीं

हूं, खैर जो कुछ हो सुबह को समझा जायगा अगर हम लोग वालिद को यह एतकाद दिला सकें कि वह बज़ुद हमारे साथ चलती है तो शायद उन्हें कोई उज्र न होगा मगर पहिले यह पक्का होना चाहिये कि वह हमारे साथ चलेगी या नहीं और इसकी लिये मुझे कुछ इशारा भी मिल चुका है"।

उसने बड़े इश्तियाक से पूछा "क्योंकर? क्या उसने आप से कुछ कहा है?"

"नहीं" मैंने कहा "भला वह उतनी भीड़ में क्यों कर कुछ कह सकती थी मगर आप जानते हैं कि मैं फारसी समझता हूं जिस के ज़िये मैं अपने उस उस्ताद मुल्ला का निहायत ममनून हूं—मगर आप फारसी नहीं समझते। मैंने उस के आखिरी गमगीन ग़ज़ल के अलफाजों और लहजे ही से बखूबी समझ लिया है कि उस की तबीयत इस कैदखाने और उस जईफ़ रफीक से एक दम आज़ुर्दः हो गई है—आप तो उस पुरानी मसल को जानते ही हैं कि "कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़"।

बद्रीनाथ ने कहा "ठीक है मगर इस्से मालूम होता है कि मेरे बनिस्वत वह आप की ज्यादातर पसन्द करेगी; और आप जानते ही हैं कि मैं ब्राह्मण हूं, सो मैं इस मामले को आप ही के लिये छोड़ देता हूं मगर जिस वक्त मेरा काम पड़े मैं आप की मदद के लिये तयार हूं। इनशाअल्ला जैसा आप लोग कहते हैं कि हम उसे बुड्ढे की दाढ़ी पर थूक कर जरूर उस का मुंह काला करेंगे।

"आमीन" मैने कहा "अब जैसे हो इस बात की कोशिश करना चाहिये, कल तक मैं आपको और भी बहुत सी बातें इस बारे में सुनाऊंगा"। इसके बाद हम दोनों अपने अपने डेरे में जाकर सो रहे; पीरखां और दूसरे शख्स हम लोगों से इतने दूर थे कि वे हमारी बातें कुछ भी न सुन सके। साहब! जब मैं लेटा तो मुझे बार २ वही ख्याल उठता था और गोकि मैंने कई मर्तबः अपने दिल को समझाया कि यह तेरी खाम ख्याली है मगर वह तो उस्के साथ वहीं रह गया था, ज्यों ज्यों उसकी खूबसूरती याद करता त्यों त्यों मछली के मानिन्द तड़फता था और जब मैं उस बुड्ढी के कहने पर ख्याल करता तो मुझे अपने कामयाबी पर ज्यादातर उम्मेद होती थी।

सुबह को नमाज़ पढ़ने के बादही गरोह के तमाम सरदार लोग इस लिये जमा हुये कि उस सेठ की गठड़ियां खोल कर देखी जांय जिसे हम लोग शाम को मार चुके थे। मेरे वालिद सभों के अफ़सर थे इसलिये उन्हीके साम्हने तमाम असबाब एक एक करके लाकर रक्खा गया। देखने से मालूम हुआ कि माल गहिरा हाथ लगा है और इसमें कोई ताज्जुब की बात न थी कि इसी लिये वह सेठ उसकी हिफाजत के लिये इतना घबड़ाता और फ़िक्र करता था। हर एक गठड़ी में देखा तो ताँबे के टूटे फूटे बरतनों में पुराने कपड़े और चीथड़ों की लपेटी हुई छोटी २ पोटलियां धरी हैं जिनके अन्दर निहायत बेशकीमत जवाहिरात मसलन् मोती हीरे लाल और याकूत वगैरह छिपाये थे, इनके सिवाय दो छोटे छोटे सन्दूकों में बहुत तरह के बेशकिमत जड़ाऊ के गहने बन्द थे जिनमें एक बाजूबन्द और दूसरा सिरपेच बहुतही उमदा नफ़ीश रौनकदार और बेशकीमत था।

मेरे वालिद ने, जिन्हें ऐसे मामलातों में ज्यादा तजरुबा था कहा कि ये सब चीज़ें कम से कम पन्दर हजार रुपयों की होंगी अगर आप लोग कहें तो मैं इन्हें जहां तक मुम्किन हो बराबर हिस्सों में तकसीम कर दूं या हैदराबाद पहुंचने पर इनके फरोख़्त से नक़्द रुपया करके बांट लिया जावे। सभों की यही सलाह ठहरी कि इनकी फरोख़्त हैदराबादही में होना चाहिये सो वे सब जवाहिरात भी उस असबाब के साथ बन्द कर दिये गये जो हम लोगों ने पेश्तर की लूट में पाया था।

मैं जानता था कि रास्ते में बसवब कमी नकद ज़र के शायद हम लोगों को खर्च की तरदुद दरपेश हो खासकर उस वक्त में कि जब कोई मालदार मुसाफिर हाथ न चढ़ा; सो मैंने वालिद से सलाह की अगर हुक्म हो तो मैं खुद नब्वाब साहब के पास जाकर जिनसे मेरी वाकफीयत हो चुकी है इनमें से एकाद ज़ेवर फरोख़्त के लिये पेश करूं। इस तजवीज को सभों ने पसन्द किया और मुझे भी इस बात की उम्मेद हुई कि शायद खुशकिस्मती से कहीं उस ज़ईफ़ औरत से भी रास्ते में मुलाकात होजाय जिसने मुझसे कल शब को बातें की थीं तो उसके साथ मिल कर ज़ोहरा के ले चलने की फ़िक्र की

जाय; सो अनकरीब दोपहर के मैंने बद्रीनाथ को साथ लिया और नव्वाब साहब के दरबार की तरफ रवाना हुआ।

रास्ते में उस दोस्त कोतवाल से मुलाकात हुई—मैंने देखा कि इस की बात चीत में देर लग जायगी सो मैंने कहा "दोस्त इस वक्त एक निहायत ज़रूरी अम्र दरपेश है सो माफ़ कीजियेगा मैं आप से दूसरे वक्त मुलाकात करूंगा, क्योंकि दोपहर हो चुका है शायद हमें हुजूर के मुलाकात के लिये जाने की इजाजत न मिले"।

"बेशक" उसने कहा "मैं आप को हर्गिज़ न रोकूंगा बल्कि अगर मुमकिन होगा तो मैं खुद आज शाम को आप के खिदमत में हुक्म बजा लाने के लिये हाज़िर होऊंगा"।

बद्रीनाथ ने कहा "इस के यह मानी हैं कि ये कुछ इनाम की उम्मेद रखते हैं, मुझे तो ऐसे उस्तादों से बरसों काम पड़ चुका है"।

मैंने कहा "हां, तो हम इन्हें खूब ईनाम देंगे और अगर हम लोग कामयाब हुये तो सब से औव्वल यह हमारी तारीफ़ गाते फिरेंगे, पर आप क्या समझते हैं?"

उसने कहा 'मैं कुछ परवाह नहीं करता हम लोग अपना काम बखूबी कर सकते हैं—यह देखो नवाब साहब के फाटक पर हम पहुंच गये"।

हम लोगों ने एक चोबदार से कहा और उसने हमारे हाज़िरी की इत्तिला नवाब साहब से गुज़ारी, थोड़ी देर बाद हम लोग हुजूर में हाज़िर हुये और जैसी कि पेश्तर के शब हो चुकी थी उसी खातिरदारी से नवाब साहब ने हम लोगों का इस्तकबाल किया।

मैंने कहा" खुदावन्द ताबेदार के वालिद बसबब बोखार व सर्दी के हुजूर के कदमों पर नज़र न गुजरान सके, उनने कहा है कि मैं हुजूर से इस के लिये माफ़ी मांगू उन्हीं के एवज़ मैं यह नायाब जवाहिर हुजूर के लिये लाया हूं जिस्से उम्मेद है कि हुजूर भी निहायत खुश होंगे; और इसकी खरीदारी से नकि फ़क्त हुजूर उनकी मदद पहुंचावेंगे बल्कि यह चीज़ भी ऐसी है कि हुजूर इसे अपने पास रक्खें और गाह बगाह पहिना करें"।

यों कह कर मैंने सरपेश पेश किया और उनके आगे व अदब रख दिया। वे उसकी रौनक और बनावट की कारीगरी व खूबसूरती और जवाहिरातों की आबदारी देख कर निहायत खुश हुये और बादजा हर तरफ़ से उसे आ-जमा कर एक आहसर्द भर कालीन पर रख दिया और यों फर्माया।

" बेशक यह चीज़ निहायत उमदा और खुद बंदगान अली के पगड़ी के लायक है मगर अफसोस मै गरीब हूं इसकी खरीदारी नहीं कर सकता क्योंकि इसकी कीमत बिलाशुबह ज़ायद होगी"।

मैंने कहा "जी हुजूर इसमें क्या शक है मेरे दादासाहब ने इसकी बहुत जादा कीमत दी होगी मगर हम लोगों का अब वह ज़माना न रहा सो जो कुछ मिल जाता है उतनेही पर लाचार हम लोग अपने घर के जेवर बख़ पर फ़रोख़ कर डालते हैं। इस बख़ भी इस गुलाम का हर्गिज यह इरादा नहीं है कि इस लासानी जेवर पर कोई मीमत मुकर्रर करे, पर तौभी बंदा यह ख्याल करता है कि हुजूर इस मौके को हर्गिज़ हाथ से जाने न देगें क्योंकि यह जेवर बस हुजूर की दस्तार के लायक है और इस काबिल है कि किसी रोज़ हुजूर इसे पहिन कर नव्वाब नीज़ाम साहब के दरबार में रौनक अफ़-रोज़ हों "।

"आपका कहना बजा है मैं चाहता हूं कि मैं इसे एक मर्तबः महल में दिखलाऊं देखूं वे लोग इसे कैसा पसन्द करतीं हैं—इनशाअल्लाह अगर उन्हें पसन्द आया तो इसकी कीमत तै करने की गुफ़गू की जायगी"।

"बेशक" मैंने कहा "हुजूर! एक वह बख़ था कि हमारे घर के लिये यह कोई बड़ी बात न थी कि एक किश्ती ऐसे जवाहिरातों से भर कर हुजूर के कदमों पर नज़र करदी जाती मगर अब हमारा वह बख़ नहीं है और जिस चीज़ को हम पहिनही नहीं सकते उसके रखने की भी अब क्या जरुरत है?"।

नव्वाब साहब ने उसे उठा लिया और ज़नानखाने को तशरीफ़ ले गये। कुछ देर बाद लौटे मगर हम लोगों ने उनके चेहरे की रौनक से मालूम कर लिया कि जेवर जनानखाने में पसन्द आया।

नवाब साहब ने फर्माया कि "उन लोगों ने इसे हजारों तरह से देखा

और यह दर्याफ़ किया कि जहां यह ज़ेवर रहेगा उसके साथ हमेश: खुशकिस्मती मौजूद रहेगी और फिर आप लोग जानते ही हैं कि जईफ औरतों के क्या क्या खयालात होते हैं। पस अब मैं आप से यह दर्याफ़ करता हूं कि इसकी कीमत क्या होगी ?। आप जानतेही हैं कि हम हैदाराबाद के रईसों के पास ज़ायद रुपया नहीं रहता लिहाजा इसकी कीमत खूब ग़ौर करके कहियेगा।

मैंने अर्ज की "खुदावन्द जिन लोगों ने इसे देखा है सबने इसकी तारीफ की है, मैं फ़कत इतनाही अर्ज़ करता हूं कि मेरे मर्हूम दादा साहब ने इस ज़ेवर की इसकदर ज्यादा कीमत दी है कि मैं उसे बयान करते खौफ़ खाता हूं। हुज़ूर ज़रा इसके नाज़ीस आब पर गौर फर्मावें। मैं जो आप से अर्ज करता हूं कि वे अपनी तमाम उम्र इन पत्थरों को एक एक करके जमा करते थे जिसमें उनका ६०००) खर्च पड़ा, सोना जो इसमें लगा है वह कुछ ज़ादा है, मगर जो इस वक़्त पांच हजार भी मिल जायगा तो ताबेदार के वालिद इसे ग़नीमत समझेंगे"।

नव्वाब साहब ने आहसर्द भरके फ़र्माया "यह तो बहुत जादा है मैं इस वक़्त इस के लिये पांच हज़ार रुपया कहां से लाऊं ? दोस्त, मैं इसे देखनेही से आसूदा होगया मगर खरीदना तो मुश्किल है, मेरे पास रुपया मौजूद नहीं पर ठहरिये मैं ज़रा जौहरियों से इसे जँचवा लूं तो शायद हमारा और आप का सौदा पट जाय"।

"जरूर" मैंने कहा "बंदे ने हुज़ूर के रोबरु इसकी कीमत के बयान में कोई दरोग नहीं अर्ज किया मगर जवहरियों को जरूर दिखला लीजिये शायद वे कुछ कम दाम आंकें मगर इस वक़्त हम लोगों को नक़द रुपयों की इस कदर जरूरत है कि शायद थोड़ा बहुत कम बेश होने से भी हम लोग लाचार मंज़ूर कर लेंगे"।

जौहरी बुलाया गया और कुछ देर बाद हाज़िर हुआ। उसे वह ज़ेवर दिखलाया गया; उसके चेहरे पर ताज्जुब के झलक से हम लोगों ने समझ लिया कि इसकी कीमत हमने कुछ ज्यादा बयान नहीं किया। वह उसे रोशनी में ले गया और चश्मा लगा कर हर तरफ़ से आज़माने और देखने लगा

आखिरकार लौट कर आया और नाक पर से चश्मा उतार कर पूछने लगा कि आप लोगों ने क्या कीमत इसकी चाही है?। मैंने उसे भी वैसाही बतला दिया।

वह बोला "इसमें शक नहीं कि जिस वक़ यह बना होगा उस वक़ इसकी इतनी कीमत होगी जितनी आप बयान करते हैं क्योंकि ये पत्थर आब के लासानी हैं तौभी हम सब जानते हैं कि आज कल के ज़माने में लोग रुपया बहुत कम खर्च करते हैं सो इन सब बातों को ख्याल करके अगर चार हजार रुपया दिया जाय तो काफ़ी होगा और हमारी समझ में यह कीमत भी ठीक है"।

मैंने कहा "जी यह बहुत कम है; सो हम लोग अपनी ज़रूरत रफ़ा करने के लिये दूसरी छोटी मोटी चीजें फ़रोख़ कर लेंगे-चुनांचे मैं आप की मिहरबानी का निहायत मम्नून हूं और अब रुखसत के लिये इजाज़त चाहता हूं" इतना कहकर मैं सरपेश उठा खड़ा हो गया।

उन्होंने फर्माया "ठहरिये, मैं तीन सौ रुपया आप को और देता हूं बस चार हज़ार तीन सौ रुपया बेशक काफी है"।

मैंने कहा "खैर तो इसे पांच सौ कर दीजिये और यह जेवर हुज़ूर की नज़र है"। दोनों तरफ़ के बहुत खींचाखींची के बाद उसकी कीमत ४४५०) पर तै हुई। इसमें से २५००) नव्वाब साहब के खजानची ने नकद दे दिया और बाक़ी के लिये मेरी इलतिजा पर वहां के एक साहूकार से हैदराबाद के नाम पर हुण्डी लिखवा दी। तब हम लोग नव्वाब साहब का शुकरीया अदा करके उनसे रवाना हुये।

नव्वाब साहब ने अपने चन्द हथियार बंद सिपाहियों को उन लोगों के साथ कर दिया जो रुपये की थैलियां लेकर हमारे हमराह हुये थे, मैंने बद्रीनाथ से आहिस्ते कहा कि सौदा कुछ बुरा नहीं हुआ इन रुपयों को देख कर मेरे जईफ वालिद का दिल निहायत खुश होगा और अपने लोगों में भी जिन्हें इस वक़ रुपये की जरूरत है तक़सीम करने के लिये थोड़ा बहुत होजायगा जिस्से वे लोग बआराम शहर तक पहुंच जांयगे चाहे कोई दूसरा शिकार हम लोगों के हाथ न भी चढ़े"।

"दरहक़ीक़त" उसने कहा "आप अपनी खुशक़िस्मती और ढंग के मम्नून हूजिये वरन जिस्तरह यह काम हुआ है हर्गिज़ ऐसी उम्मेद न थी"। अगर मैने इस पर कोशिश की होती तो गोकि मैं पुराना ठग हूं ताहम उम्दे बहाने के न होने से मुझे कामयाबी का खौफ़ था। आपने उस बुड्ढे को अपने वालिद की गैरहाजिरी का ऐसा उमदा सबब समझा दिया कि उसे सचही एतक़ाद होगया। भगवान जानता है आप अब खूब होशियार होगये"।

मैने कहा "इन बातों से अक़्ल तेज़ हो जाती है, और गोकि मैं आपके माफ़िक़ किसी कमबख़्त मुसाफ़िर को धोखा नहीं दे सकता ताहम् मौका पड़ने पर मैभी आपका कुछ काम निकाल सकता हूं"।

उसने कहा "आहिस्ते २ सब आपही आ जायगा, जब आप इन कामों को कर सकते हैं तो वह कौन बड़ी बात है, अगर आप मेरे साथ काम पर चला करेंगे तो मैं ख्याल करता हूं कि बहुत जल्द आप मुझ से भी बढ़ जायगे"।

मैने कहा "देखा जायगा, मगर जिस काम के लिये निकले थे वह तो हुआही नहीं उस बुढ्ढी से मुलाकात न हुई"।

"हां सो वह बात अब तक आप के दिमाक मे चढ़ी है—मैं कह सकता हूं कि रात को आपने ज़रूर उस कंचनी का ख्वाब देखा होगा कि जिसका जोश अबतक आपके दिल में भरा है"।

मैने हँसकर कहा "नहीं, सो तो नहीं है मगर मुझे कुछ उम्मेद है, कुछ देर बाद में कोतवाल साहब की चौकी पर लौट कर आऊँगा और शायद कहीं बाज़ार में उस ज़ईफ़ औरत से मुलाकात हो जाय"।

उसने पूछा "तो क्या मैं भी आपके साथ चलूं?"।

मैने कहा "नहीं हर्गेज़ नहीं, ऐसा करने से काम बिगड़ जायगा, मैं तनहा जाऊंगा क्योंकि अगर मेरे साथ कोई दूसरा शख़्स रहेगा तो शायद वह मिलने पर कुछ बात न करे"।

उसने कहा "जैसी आपकी मर्ज़ी चूंकि आप इस काम को करने का मुसम्मम इरादा रखते हैं और मेरे बनिस्बत आप को कामयाबी की ज़्यादातर

उम्मेद है तो बेहतर है कि आप अकेलेही जांय मासिवाय इसके आपतो खास शख्स हैं और मै तो आपका गुमाश्ता ठहरा"।

यों बातें करते हुये हम लोग अपने डेरेपर पहुंचे और उन सिपाही और मज़दूरों को कुछ इनाम देकर थैलियां वालिद के खेमें में रखवादीं, वे सोये हुये थे, मैने उन थैलियों को उनके साम्हने रखदीं और जगाकर दिखलाया।

पहिले तो वे जगाये जाने पर कुछ नाखुश हुये और आंखे मलने लगे, पर जब थैलियों को आगे रक्खा हुआ देखा तो उठ कर एक एक का वज़न आंजमाने लगे और ताजुब से बोले—

"क्या बेटा! अमीर अली! यह सब तूने कहां से पाया? हर एक में पांच पांच सौ होगा? एक, दो, तीन, चार, पाँच—दो हज़ार पांच सौ! यह तो गैरमुमकिन् जान पड़ता है! क्या कर रहा था फ़र्ज़न्द? यह तू कहां से लाया?"

मैने कहा "जितना आपने फर्माया ठीक उतनाही है, हरएक में अंदाजन पांच सौ है। यह उस जेवर की कीमत है जो आपने मुझे फरोख़ करने के लिये दिया था, जितना हम लोगों ने ख्याल किया था उस से इसकी कीमत कहीं ज्यादा थी। मैने योंही यकबयक ५०००) कह दिया सो मैं ४४५०) आपके लिये ले आया हूं, बस इतनाही में पा सका, दो हज़ार की हुंडी है और बाकी का रुपया थैलियों मे है।

"तू ने तो गज़ब किया" वालिद ने कहा "माशाअल्ला हम लोग तो मालामाल होगये, यह तो हमारी उम्मेद से भी ज़ादा है" इतना कह कर उन्होंने आखोंमे आंसू भर मुझे सीने से लगा लिया"।

मैने कहा "चूंकि मुझसे यह खिदमत बनपड़ी है इसके एवज़ में कुछ आप से अर्ज करता हूं और उम्मेद करता हूं कि आप उसे मंजूर करेंगे क्योंकि मैं इसे वगैर आप के हुक्म के नहीं कर सकता"।

वालिद ने कहा "हां कहो—ऐसी कोई चीज़ नही है जो मैं तुझे देने से इनकार करूं"।

मैने कहा कि एक तवायफ निहायत खूबसूरत परीज़ाद जिसका गाना मानिन्द बुलबुल के है अज़खुद हम लोगों के साथ हैदराबाद चला चाहती है।

मगर मैंने बगैर आपकी इजाज़त के उसे अपने साथ ले चलने का वादा न किया"।

इतना सुनते ही वालिद का रंग तो फ़क़ हो गया और बोले "क्या कहा? तवायफ़ है? फ़र्जन्द! क्या तुझे याद नहीं है कि जो जो खबरदारियां और हिदायत मैंने तुझे ऐसे लोगों के बारे में दीथीं और क्या तू एक दम उन्हें ऐसा भूलगया कि पहिले ही मौक़े पर फिसल गया?"।

मैंने कहा "जी हर्गिज़ नहीं, न मैं उन्हें भूला हूं और न मैंने उसका साथ किया है। कल शब को मैंने उसे नवाब साहब के दरबार में देखा था मगर मैं तो उस्से बोला तक नहीं।

"तब तूने कैसे जाना कि वह यहां से जाया चाहती है?"।

मैंने कहा "जी मैंने यह सब हाल एक बुढ्ढी औरत से जो उसके साथ र-हती है सुना है, शायद वह बुढ्ढी आज शामतक यहां आवेगी"।

मेरे वालिद ने सिर हिलाया और कहा "मेरे फ़र्जन्द मैं तेरी बातका एतकाद करता हूं मगर मुझे तेरे इस नौजवान दिल और तेजमिज़ाजी का खौफ़ है। यह सख़ खतरे का मुकाम है। जहां वह हमारे साथ हुई कि वह तुझे अपनी दाम मे फँसा लेगी, फिर वालिद और कारोबार सब फ़रामोश हो जायगा और मेरे फ़र्ज़न्द तू मेरे हाथ से जाता रहैगा जिस्से बिलाशक मेरी मौत होगी"।

मैंने अर्ज़ की "आप हर्गिज़ ऐसा ख्याल न फ़र्माइये, जिस बात का आप खौफ़ करते हैं वह हर्गिज़ होने वाली नहीं, रास्ते में कभी २ शाम के वक़्त गाने से दिल बहलाने के सिवाय उस्से मिलने की भी क्या ज़रूरत है, मेरी यही इलतिजा है कि आप मेरी इस अर्ज़ को कबूल कीजिये, मैंने आज तक आप से किसी बात की इलतिजा नही की है मै उम्मेद करता हूं कि आप मेरी खिद्मतों को ख्याल फ़रमा कर मेरी आर्ज़ू बर आने का हुक्म देंगें"।

उनने कहा "मेरे फ़र्जन्द! इसके सिवाय मैं तुम्हारी तमाम बातें बखूबी मंज़ूर कर सकता पर खैर, लाचार मैं तुझ पर एतकाद रखता हूं, जैसी तेरी मर्ज़ी इस में अब मैं कुछ न कहूंगा"।

यहां तक तो कोई उज्र न था; ताहम् जब मैं ख्याल करता कि मैंने अपने वालिद से यह बात पोशीदा रक्खी है कि वह नव्वाब साहब के यहां नौकर है और शायद ऐसा करने से हमको कोई तकलीफ़ उठाना पड़े तो मेरा दिल धड़कने लगता। फिर मैंने ख्याल किया कि औरतों की अक्ल निहायत तेज़ होती है अगर उसे दरहकीकत यहां से चलना है तो वह कोई न कोई तदबीर निकालही लेगी।

मैं फ़ौरन् बाज़ार को रवाना हुआ। बाज़जा कई दूकानों के पास से घूमता फिरता और ज़रूरी चीजें खरीदता हुआ मैं चौकी व की सीढ़ियां चढ़ने लगा और कोतवाल के पास पहुंचा और उस्से शहर की बातें करने लगा; कोतवाल ने बातहो बात अपना तमाम इख़्तियार और दबदबा जतलाने में कोई कसर बाकी न छोड़ा। कई मर्तबः मेरे दिल में आया कि मैं उसे अपना इरादा बतला कर कुछ घूस दे मदद चाहूं मगर फिर भी मैं अपने तईं इसी ख्याल से रोकता था कि शायद यह मुझसे रुपया भी ले ले और बाज़जां धोखादेवे। मगर शुक्र खुदा का कि मुझे अर्से तक इस शुबहे में न रहना पड़ा, मैंने देखा कि नीचे बाज़ार में वही बुड्ढी औरत चली आती है और जिस राह से मैं आया था उसी राह से आने की कोशिश कर रही है, मैंने देखा कि यह मौका हर्गिज़ चूकने का नहीं बस फ़ौरन कोतवाल से रुकसद हो रवाना हुआ और उस्से कहा कि आप की खातिरदारी का मैं निहायत ममनून हूं आप इनशाअल्ला अगर आज शाम को डेरे में तशरीफ़ लावेंगे तो मै जहां तक होसकेगा खिदमत बजा लाऊंगा।

जब तक मैं ज़ीने से उतर कर नीचे पहुंचू तब तक वह बुड्ढी नज़रों से गायब हो गई थी। फाटक के बाहर पहुंच कर मैंने उस्से मुलाकात की और कहा-"अम्मा ज़रा ठहरो तो, क्या मुझे तलाश कर रही हो?"।

उसने कहा "ऐ मेरे जान! मेरे शहजादे! शुक्र खुदा का कि आखिरकार मैंने तुझे पाया तो सही। मै कलरात से तेरी तालाश में फिर रही हूं मैंने तुझे महलों में जाते देखा मगर मै जईफ तुझ तक जल्द पहुंच न सकी और तू आगे निकल गया"-इतना कह कर वह मेरे सिर पर से हाथ फेर बलैया लेने लगी और अंगुलियों की गिरह अपने सिर से चटकाने लगी और बोली—

"यहां कोई देखता सुनता तो नहीं क्योंकि मैंने तुमसे बहुत सी बातें कहना है मगर जल्द कहा चाहती हूं"।

मैंने कहा "यहां नहीं; यह मुकाम इस लायक नहीं है, मैं अपने खेमे को चलता हूं तू मेरे पीछे पीछे चली आ, वहां मैं तेरे इन्तिज़ार में खड़ा रहूंगा'। इतना कह कर मैं रवाना हुआ और एक आम के दरख़ तले तखलीये में जाकर खड़ा हो रहा वह बुढ्ढी भी गिरती पड़ती वहां पहुंची और बेदम होकर बैठ गई। जब उसे कुछ दम आया तो उसने अपने कपड़े के एक कोने से एक छोटी सी अंगूठी खोल कर मुझे नज़र दी और कहा—

"यह उस्की तरफ से नज़र है जिसे तुम खूब जानते हो और अल्लाह के लिये तुम उसके वास्ते कोशिश करो, वह इस जगह मर रही है और उस कमबख़ नव्वाब की हर तरह की अज़ीयतें उठाती है। किसी रोज तो वह उस पर निहायत मेहरबान होकर हर तरह की खातिरदारी करता है और किसी दिन गुस्से के जोश में आकर उसे हर तरह के आरामों से महरूम कर अकेली कोठड़ी में बन्द कर देता है और मुझे भी उसके पास जाने नहीं देता। मेरे फ़र्ज़न्द! तुम जवान और दिलेर हो उसे इस तकलीफ में न रहने दोगे, वह हैदराबाद में नायाब शै है जो वहां के शहजादों और रईसों की निगाहों में निहायत अज़ीज है। अल्लाह के लिये जरा कोशिश करो और वह यहां से आज़ाद होकर कयामत तक तुम्हारा साथ देगी। वह तुम्हे देख चुकी है और तुम्हारी खूबसूरती उसके दिल में चुभ कर उसका जिगर जला रही है अब इन दोनों मुसीबत में वह आज ऐसी परेशान है कि मैं उसे किसी तरह दिलासा न दे सकी"।

मैंने कहा "बूआ मैं तो तयार हूं-गोकि सिवाय उसका गाना सुनने के मैंने उस्से अभी तक कोई बात नहीं की है पर तोभी मैं उतनेही से समझ गया था। उसकी आखिरी गज़ल अबतक मेरे दिल में खटक रही है क्यों उसका इशारा मेरे ही पर था न"?

उसने कहा "तुमने ठीक समझा, मैंने इसी लिये उसे वह गज़ल गाने को कहा था कि शायद तुम इशारा समझ जाओ और शुक्र है अल्लाह का कि मेरी

कोशिश बेफ़ायदा न हुई, मगर वक़्त गुज़रा जाता है अब क्या किया जाय"?।

मैने कहा "यह तो तुम्ही बतलाओ मैं नहीं जानता कि क्या करना चाहिये; न मैं इस शहर का हाल जानता हूं और न मैं उसके मकान ही का पता रखता हूं कि वह कहां रहती है, सो भला मैं क्या सलाह दे सकता हूं? मैं इस बारे में लाचार हूं मगर जो कहो सो करने को तयार हूं।

बुड्ढी ने कहा "अच्छा सुनो मैं उस जगह का पता बतलाती हूं, तुम मेरे पीछे पीछे चल कर बाहर से देख लो ताकि तुम रात के वक़्त पहिचान सको। वह मुकाम जहाँ वह इस वक़्त है और जहां वह आज शब को रहेगी एक छोटा सा खपड़ेदार मकान है और जनाने के पीछे गली की तरफ़ वाक़ा है ज़मीन से थोड़ी ऊंचाई पर उसमें दो खिड़कियां हैं अगर कोई शख़्स बाहर मददगार खड़ा हो तो वह बआसानी उधर से उतर सकती है। और कोई दूसरा रास्ता उसके भागने का नहीं है क्योंकि जनानखाने से होकर दालान से गुज़रना जहां सिपाहियों का पहरा रहता है गैरमुमकिन है। कहो तुम्हारी हिम्मत पड़ती है? या बुज़दिल नामर्द की मानिन्द ऐसी खूबसूरत परीज़ाद के लिये एक कतरा खून बहाने में भी तुम्हे खौफ़ लगता है"?।

मैने कहा "मैं नामर्द नहीं हूं गोंकि मै इस बात की शेखी तो नहीं करता मगर अल्लाह मददगार है मैं उसकी हिफ़ाज़त में जान तक दे सकता हूं। क्या वहां सिपाही भी पहरे पर रहते हैं?"।

उसने कहा "नहीं, एक भी नहीं मगर फ़क़त एक खतरा शहर के फाटक ही का है जहां हमेशा पहरा रहता है, वहां से कैसे बच कर निकलोगे?"।

मैने कहा "अगर इतनाही है तो मुझ पर एतकाद रक्खो और इनशाअल्लाह सुबह को हम नव्वाब साहब पर कहकहा उड़ावेंगे। मगर पहिले मुझे यह बतलाओ कि तुमने वहां से निकलने की क्या तदबीर सोची है"?

"आह! उसका मैं तमाम बन्दोबस्त कर चुकी हूं। रात को मुझे ज़ोहरा के काम के बहाने हर वक़्त फाटक बाहर जाने की इज़ाजत है, आधी शब को तुम जहां पक्का कर रक्खो मै तुम्हें आकर मिल सकती हूं"।

"अच्छी बात है" मैने कहा "अब चलकर मुझे वह मुकाम दिखला दो"।

इतना कह कर जिस फाटक से हम लोग आये थे उधरही को वह आगे २ चली और एक तंग गली में पहुँचकर मुझसे कहने लगी कि रास्ते के हर मोड़ व मुकामों को खूब याद रखना। मैंने कहा बेहतर है। चलते २ दो ऊंची दीवारों के बीच की एक गली में पहुंचा जहां नव्वाब शाहब का जनानखाना था; आगे बढ़ कर एक खपड़ैदार छोटा सा मकान दिखलाई दिया जो ठीक उस बुड्ढी के बयान से मिलता था"।

उसने कहा "बस यही मुकाम है और यही खिड़की है जिसमें से वह उतरेगी। कुछ बहुत ऊंचा नहीं है और उसके उतर आने में कुछ ज़ादा मुश्किल न पड़ेगी"।

मैंने जवाब दिया "नहीं यह कोई मुश्किल बात नहीं है फकत उसे अपना दिल मज़बूत रखना चाहिये। उससे कह देना कि वह दो एक कपड़ों को खूब मजबूत बांधकर नीचे लटका देवे हम नीचे खड़े रहेंगे और उसके उतरते वक़्त हिफाजत र[illegible] ताकि वह बाआसानी ज़मीन पर आ जावे"।

उसने कहा "अच्छा [illegible] दूंगी बस अब जाओ नहीं तो कोई देख लेगा, अल्लाह मददगार है"।

मैंने कहा "वह कौन देख रहा है? खिड़की में से एकहाथ निकला हुआ दिखलाई पड़ता है"।

उसने कहा "यह ज़ोहरा है, जब यह सुनेगी कि उसकी मदद के लिये तुम तयार हो तो उसे कैसी खुशी हासिल होगी! मेरी मैना! अब तू इस सोने के पिंजड़े में न रहेगी। मगर जाओ, मेरे शहजादे! अब यहां न ठहरो गोकि इस वक़्त उसका एक मर्तबः भी मुस्कराना तुम्हारे लिये बहुत है मगर घबड़ाओ मत आजही शब को तुम हज़ारों मर्तबः गले लगा लगा कर उससे मिलोगे"।

मैंने कहा "लो मैं जाता हूं पर तुम्हें मेरे जान की कसम ऐसा न हो कि तुम कहीं चूक जाओ। मुझसे उसी मोड़ पर मुलाकात होगी"।

उस बुड्ढी ने सिर हिला दिया और मैं फ़ौरन् वहां से हवा होगया, गोकि मैं उसकी एक निगाह के लिये तमाम जहान कुर्बान कर देता मगर मैंने देखाकि इस वक़्त मेरा यहां ठहरना वाजिब न होगा। ज्योंही मैं अपने खेमे में

पहुंचा मैंने बद्रीनाथ को बुला भेजा और अपनी कामयाबी का हाल उसे सुनाया और जो जो बातें हुई थी सब कह दीं। वह भी सुनकर निहायत खुश हुआ और बोला कि यहां तक तो सब दुरुस्त है मगर एक बात की दिक़त है सो मैं तुम्हे आगाह कर देता हूं, आगे तुम्हारी मर्ज़ी"।

मैंने पूछा "वह क्या है?"

उसने कहा "गोकि उस वक्त शहर के फाटक बाहर निकल आना आसान बात हो जैसा कि आप कहते हैं मगर अन्दर जाना उतना सहल नहीं है"॥

मैंने कहा "अल्लाह जानता है आप सही कहते हैं तो फिर इसमें आप क्या सलाह देते हैं?"

उसने कहा "आप देखते ही हैं कि फाटकों पर पहरा रहता है। कल आधी रात के पेश्तरही मैंने शहर में जाना चाहा क्योंकि मैंने भी आपही के मानिन्द एक तार लगाया था और वह बिचारी मेरे आसरे बैठी थी, मगर ये कुत्ते के बच्चे फाटकवाले मुझे चोर कहने लगे, बादज़ां मुझ से और उनसे बड़ी गाली गुफ़्ता हुई आखिरकार उन सभों ने मेरे साम्हने ही फाटक बन्द कर दिया और मुझे लाचार होकर अपना सा मुंह लेकर लौट आना पड़ा। मेरी सलाह तो यह है कि रात के पेश्तरही हमलोग चलें और उस भठियारे की दूकान पर जिस्से मैंने रफ़ाक़त पैदा कर ली है टिक रहें; अगर हम रात को उसकी दूकान छोड़ कर चले जाँयगे तो वह हम पर किसी तरह का शुबहा न करेगा क्योंकि आज मैंने उसे कल की बदनसीबी का हाल सुनाया था सो उसीने इस बात की सलाह दी कि आज शामही को आप आ जाइयेगा और बादज़ां चाहे जहाँ चले जाइयेगा। सो आप क्या कहते हैं? उस भठियारे के पास चलना चाहिये या वक्त पर जैसे बने अन्दर घुसने की तरकीब की जाय?"।

मैंने कहा "आप की तरकीब दुरुस्त है कल की बदकिस्मती के लिये मैं आप का निहायत शुकरगुज़ार हूं वरनः हमलोग आज भी जाकर फाटक पर बेफायदा सिर पटक चले आते। पर हमलोग दीवार पर चढ़ कर कूद जाँयगे शायद यह तदबीर आप ने न ख्याल किया होगा"।

उसने कहा "मैंने पेश्तरही ऐसा इरादा किया था और अनकरीब था कि दीवार पर चढ़ जाऊं मगर फिर ख्याल किया कि शायद कोई मुझे देख ले और चोर समझ कर कुत्ते के मानिन्द गोली से उड़ा दे तो मुफ़ में जान जाय इसलिये मैं वापस चला आया"।

मैंने कहा "आप बड़े दूरन्देश हैं मैं तो अपने गर्म खून के जोश में आकर किसी न किसी बला में ज़रूर फँस जाता मगर आपने निहायत होशियारी का काम किया"।

बद्रीनाथ ने जवाब दिया "तो मैं आपके लिये तयार हूं, चलिये थोड़ी देर आराम करलें बादज़ाँ दूसरे फाटक से अंदर चलेंगे; गोकि उधर से थोड़ा फेर पड़ेगा मगर इस फाटक के सिपाहियों से मिलने की बनिस्बत वह बेहतर होगा, मैं शक करता हूं कि ये मुझे जानते हैं और मेरी आवाज़ पहिचान लेंगे क्योंकि कल रात को उन सभों से बहुत कुछ कहा सुनी हो चुकी है"।

मैंने कहा "बेहतर है मैं कुछ खाना खा लूं क्योंकि आज सुबह से फाका है, और खाली पेट ऐसे २ काम नहीं होते"।

कुछ खाना खाकर मैं सो रहा और उठने पर मगरब की नमाज़ के बाद बद्रीनाथ को साथ ले शहर को रवाना हुआ, बेहतर हुआ कि हम लोगों ने ऐसा किया क्योंकि फाटक वाले उसे अच्छी तरह पहिचानते थे और उसे देखते ही दिल्लगी से कहने लगे। एक बोला "दोस्त आजतो जल्द आये और अक्लमंदी का काम किया वरनः अगर आज भी देर से आते तो हम लोग फिर फाटक बन्द कर देते। बद्रीनाथ ने हँसकर जवाब दिया "कि आप को कुछ ज्यादा खलीक़ होना चाहिये था, खैर आपने जाने तो नहीं दिया मगर मैं ख्याल करता हूं कि अगर मैं किसी को साथ लेता आऊं तो शायद बाहर आने में आप को कुछ उज्र न होगा"।

उस पहरे वाले ने कहा "इसके बरखिलाफ़ तो कोई हुक्म नहीं है, पर आप को कुछ सरकारी गम खाना होगा, पस जो आप के पास रुपया न हो तो बेहतर है कि आप बाहरही तशरीफ़ रक्खें ।

बद्रीनाथ ने कहा "खैर कहीं से उधार ले लेंगे जो आप के हुक्के के लिये महीनों काफी होगा अगर ऐसा मौका पड़गया तो।

सबने कहा "अच्छा मंजूर है अल्ला चाहेगा तो हमारा आप का सौदा पट जायगा—हमें कुछ रुपया हाथ कराइये फिर चाहे जिसे ले जाइये, खुशी होतो नव्वाब साहब का हिरम भी निकाल ले जाइये"।

मैंने कहा "तुम्हारा सरदार कहां है ?" इतने मे एक सिपाही मेरे रूबरू आया और सलाम कर बोला "ताबेदार हाजिर है, यहां तो चाहे जो हो जाय, हम लोग आंख बचा जाते हैं"।

मैंने कहा "बशर्ते कि तुम्हारी मुट्ठी गरम की जाय"।

"इसमें क्या शक है" उसने हँस कर कहा "आप जैसे रईसों से जब कभी मुलाकात होती है तभी तो हम लोगों की किस्मत खुलती है"।

मैंने कहा "तो यह लो ५) हैं, खूब लहर काटो मगर देखो कहीं शराब पीकर बेहोश न हो जाना नहीं तो हमपर नाहक बदनामी आवेगी ?

सभों ने कहा "हुजूर की इनायत है हम लोग तो हूजूर के फर्माबर्दार खादिम हैं"।

हमलोग आगे बढ़े और बद्रीनाथ ने मुझसे पूछा "कहिये बाहर निकलने की आप ने कौन सी तद्बीर ख्याल की है" ?

मैंने कहा "अब इस फाटक से आना दुरुस्त न होगा क्योंकि आखिरकार इस वारदात की तालाश होहीगी और अगर हम इधर ही से निकलेंगे तो शायद हमारी गिरफ्तारी हो जाय—बेहतर होगा कि पहिले दूसरे फाटक से कोशिश की जाय"।

बद्रीनाथ ने कहा "मैं शर्त लगाताहूं कि घंटे भर के बाद ये सब शराब पीकर बेहोश हो जांयगे, हम लोग खुद फाटक खोल लेंगें, मगर यह देखिये भठियारे की दूकान पर हम पहुँच गये, क्या उमदा खुशबू कबाब की आरही है। कभी २ मेरी तबीयत होती है कि मैं ब्राह्मण न होता तो बेहतर होता ताकि मैं भी आपके मानिन्द कबाब की लज्जत लेता"

मैने कहा "खुब कही । मगर कभी २ तो आपकी भी तबीयत चल जाती होगी"।

बद्रीनाथ ने कहा "हरे हरे ! ऐसा न कहिये, मैं ब्राह्मण हूं और हमेशा ऐसा ही रहूंगा—आप जानतेही हैं कि हमारे धर्म्म में लिखा है कि चौरासी लाख जोनि भोगने के बाद आदमी का चोला मिलता है, पस मैं ऐसा बेवकूफ़ नहीं हूं कि थोड़े से कब्बाबों के लिये फिर अपने तईं इतने ऊँचे से गिराऊं"।

मैने कहा "ठीक कहते हैं खैर मैंतो खाता हूं, डेरे पर खा न सका, मगर इनकी खुशबू से मेरी भूख उभड़ आई है"। इतना कहकर मैने भठियारे से खाना मँगाया और गर्मागर्म खिचड़ी और कबाब मसालेदार खूब उड़ाया"।

जब मैं खा पी चुका मैने भठियारे से कहा "दोस्त, बिलाशक तुम्हारी दूकान पर शैतान आते होंगें क्योंकि इन कबाबों को तो वही शख्स खाय जिसे लोहे के मुँह हों"।

उसने कहा—"माफ़ कीजियेगा मैं कहीं काम से गया था और शायद मेरी लड़की ने मिर्च ज्यादा डालदी मगर मैं हुजूर के लिये थोड़ा शर्बत तयार कर देता हूं कि जो अहलेईमानों को बिहिश्त में मुयस्सर होता है"।

मैने कहा "एक चिलम भी भरते लाना—तो उस्से ज्यादा आराम मालूम पड़ेगा"।

दसवां अध्याय ।

मेरे इस कहने पर भठियारा अपनी कोठरी में गया और मैंने देखा कि वह मुझे खुश करने के लिये तय्यारियां कर रहा है। थोड़ी देर बाद वह शरबत तयार कर लाया, उस की सर्दी और गुलाब की खुशबू से जिस्से वह मुअत्तर किया था मेरे मुंह का जलना कुछ कम हुआ और मैं आराम से हुका पीने लगा। गोकि यह तमाखू उतना उमदा तो न था कि जैसा नव्वाब साहब ने मुझे इनायत किया था तो भी इस की लज्जत अच्छी थी और मुझे कुछ फरहत मालूम पड़ने लगी।

बद्रीनाथ ने कहा "अब तो आप की तबीयत खुश मालूम पड़ती है"।

मैंने कहा "हां मगर आप ब्राह्मण होकर भी शायद मेरे म्वाफिक आराम चाहते होंगे?"

उसने कहा "शायद, चूंकि मैंने आज तक कभी गोश्त वगैरह नहीं चक्खा है जिस की आप इतनी तारीफ़ बयान करते हैं मैं उन का ठीक हाल नहीं बयान कर सकता मगर मैं हर्गिज़ गोश्त नहीं पसन्द करता, क्योंकि फ़कत गोश्त का ख्याल ही, उस की कच्ची हालत खून और चर्बी से भरी हुई, मेरे निगाह को नफरत देती है मुझे शक है कि अगर मैं मुसलमान भी हो जाऊं तो भी शायद मैं गोश्त हर्गिज़ न खा सकूंगा क्योंकि उसे ख्याल करने ही से मेरी तबीयत बिगड़ जाती है।

मैं उसकी इस नफरत पर खूब हँसा मगर वह कुछ भी नाराज़ न हुआ।

मैंने कहा "तो ऐन वक़्त पर क्योंकर जागना होगा क्योंकि एक घंटा पेश्तर या बाद उठने से हमारी मकसूदबरारी न होगी"।

उसने कहा "मैं भी यही ग़ौर कर रहा हूं" इतना कह कर वह भठियारे की तरफ फिरा और उससे पूछने लगा "तुम कब तक जागते रहते हो? क्योंकि दोस्त, आज आधीरात को हमें एक ज़रूरी काम दरपेश है अगर हम सो जांय तो हमें ऐन वक़्त पर जगा सकोगे?"

उसने कहा "बेशक आधीरात के पेश्तर तो मैं कभी अपनी दूकान बन्द नहीं करता क्योंकि बाज़ वक़्त मुसाफिर आ जाते हैं और वे भूखे बिचारे सब से औव्वल भठियारेही की दूकान तलाश करते हैं, अगर उस वक़्त कुछ गर्म चीज़ उनके लिये तयार न रहे तो मेरे लिये निहायत शर्म व अफ़सोस की बात है!"

मैंने उस के साम्हने चंद रुपये फेंक दिये और कहा "यह लो यह तुम्हारे कबाब की कीमत से कहीं ज्यादा है, अब तो तुम जागते रहोगे न?"

उसने रुपये उठा लिये और झुक झुक कर सलाम करने लगा और बोला खुदा आप की मुरादें पूरी करे, बंदा हुजूर को ऐन वक़्त पर जगा देगा। मेरी चिलम जल गई थी और कुछ झपकी आने लगी सो मैं लेट कर सो रहा मगर थोड़ी ही देर आराम करने पाया। जैसा कि अकसर ऐसे मौकों पर हुआ क-

रता है मुझे खटके में नींद न आई कहीं ऐसा न हो कि मैं सो जाऊं और वक़्त गुज़र जाय। सो मैं उठ बैठा देखा कि भठियारा कबाब पकाने में मशगूल है और उसकी लड़की कबाब को आग पर सेंक रही है।

उसने मुझे बैठे देखा और कहा "साहब आप जल्द जागे, अभी आप के मुऐयन वक़्त में खासा एक घंटा बाकी है बेहतर है कि आप फिर सो रहें आप देखते ही हैं कि मुझे अभी इतना काम करना बाकी है कि उस वक़्त के मा-बाद तक जागता रहूंगा क्योंकि चंद मुसाफिर आगये हैं और मुझे उन की आसूदगी के लिये खाना तयार करना है।

मैंने कहा "अब कुछ ज़रूरत नहीं मेरी तबीयत ताज़ी हो गई है बस एक ही चिलम उस वक़्त तक जागने के लिये काफ़ी होगा"।

उसने कहा "मैं समझ गया आप नौजवानों का नया खून होता है और हमेशा किसी न किसी शिकार के तलाश में रहते हैं; यह वाजिब है, वरना जो शख्स नौजवान हो कर आप जैसी तबीयत नहीं रखता वह मेरी दानिस्त में कौड़ी को भी मँहगा है"।

मैंने कहा "तुम्हारे कार की तरक्की हो मगर एक चिलम और तो लाना, पहिली चिलम की लज़्ज़त अब तक मेरे ज़बान पर चढ़ी है"।

इतना सुन कर वह अपनी कोठरी में चला गया और बाद थोड़ी देर के हुक्का भर लाया और मुझे दे कर बोला—

"हुज़ूर उस अव्वल चिलम से तो खुश हुये ही हैं मगर यह उस से भी बढ़ कर है इसमें कई एक उम्दे २ मसाले पड़े हैं, यह तमाखू हुज़ूर जैसे रईसों के सिवाय मैं हर्गिज़ दूसरों को नहीं देता, आम लोग इसकी क़द्र क्या समझेंगे"।

यह चिलम बिलाशक निहायत उमदा थी और उसने कई मर्तब: भर भर कर मुझे दी, तब वह बोला कि अब आप का वक़्त हो गया।

"वह देखिये साम्हने जो सितारा दिखलाई पड़ता है वह आधीरात से कुछ पेश्तर इस मकान पर आ जाता है पस अपने साथी को जगाइये, आप की इन्तज़ारी देखी जाती होगी"।

मैंने बद्रीनाथ को जगाया और वह उठ कर मेरे साथ चला, भठियारे से

रुखसत हो कर हम लोगों ने भी अकेली सुनसान गलियों से जाये-मकसूद का रास्ता लिया ।

बद्रीनाथ ने कहा "हम लोग चोरों के माफिक चले जाते हैं, अगर गांव का पहरेवाला हमें गिरफ़ार कर ले तो उस वक्त क्या जवाब देंगे" ।

मैंने कहा "कुछ परवाह नहीं"—ज्योंही इतना कह कर आगे बढ़ा देखता क्या हूं कि रौंद याने गश्तगर्द के पहरेवाले चले आते हैं । हमारे नज़दीक ही एक फाटक खुला हुआ था हम लोग फौरन् उसके अंदर जाकर बड़े २ दर्वाज़ों के पीछे छिप रहे, मगर सिपाहियों ने हमें देख लिया, क्योंकि मैंने एक ज्वान को कहते सुना कि मैंने दो शख्सों को फाटक के पीछे दबकते देखा है । दूसरे ने कहा "चुप रह तू तो हमेशाही अंधेरे में चोर देखा करता है । चल, आधी-रात हो गई मुझे नींद आ रही है, आगे चल के डफला बजा देते हैं कोई चोर सोर होगा तो आप ही भाग जायगा" ।

थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने ज़ोर से जम्हाई ली जिससे मालूम हुआ कि दरहकीकत उसे नींद आई है । उनके चले जाने पर हम लोग फाटक के पीछे से निकले और डफले और नरसिंघे की आवाज़ सुनी । साथही शहर के दूसरे जानिब से भी डफले और नरसिंघे की आवाज़ आई जिसके बाद फिर तमाम सन्नाटा छा गया:—फकत कभी २ कुत्ते के भूंकने की आवाज़ चांदनी में आती थी।

मैंने कहा "अब कुछ खतरा नहीं है हम लोग उस मुकाम के पास पहुंच गये" । दस बीस कदम आगे बढ़ कर हम लोग उस मोड़ पर पहुंचे जहां उस बुड्ढी ने मिलने का इकरार किया था और उसे कौल की सच्ची देख कर हम लोगों को निहायत खुशी हासिल हुई ।

उसने हमें देखते ही खुश हो कर कहा "खुदा की रहमत मेरे शहजादे पर, मैं एक मुद्दत से यहां तुम्हारे आसरे खड़ी हूं आज की रात कैसी भारी हो गई । मैंने आहिस्ते से पूछा "सब दुरुस्त है और वह तयार है ?"

उसने कहा "हां वह तयार है जैसे मुश्किल से मेरा वक्त गुज़रा है वैसे ही उसे भी गुज़रा होगा । उसने ऐसी तरकीब निकाली है कि कोई कुछ भी शक न कर सकेगा" इतना कह कर वह खूब हँसी ।

मैंने कहा "अल्ला के लिये चुप रहो ऐसा न हो कि कोई देख या सुन ले नहीं तो सभी बात बिगड़ जाय"।

उसने कहा "इस बात का कुछ भी खौफ़ नहीं है, इधर का मकान तो इस तरफ खाली है और दीवार के पीछे दूसरी तरफ सिर्फ नव्वाब साहब का बगीचा है जहां रात को कोई नहीं रहता"।

मैंने पूछा "उसने क्या तरकीब निकाली है, क्या मैं भी उस में कुछ मदद पहुंचा सकता हूं?"

उस बुड्ढी ने कहा "नहीं कहीं यह उसी की ईजाद है, ज्योंही मैं उस के पास पहुंची कि उसने मुझे कहा कि कहीं से थोड़ा खून ले आ। मैं कुछ भी न समझी कि वह खून ले कर क्या करेगी, खैर मैं गई और एक हलवान गोश्त के बहाने से मार कर खून ले आई। ज्योंही मैं लौट कर आई उस ने थोड़ा सा खून तो अपने बिस्तरे पर छिड़क दिया, पलंग के चद्दरे और कपड़े सब तराबोर कर दिये अपने कपड़ों को भी फाड़फूड़ कर इधर उधर कमरे में डाल दिये और थोड़े से सिर के बाल भी नोंच खसोट कर फेंक दिये जिस में देखने वालों को यह मालूम पड़े कि वह ज़ख्मी हो गई है और उसे कोई शख्स ज़बरदस्ती ले भागा है। वाह क्या उमदा तरकीब है! खूबी तो यह है कि यहां से थोड़े ही दूर पर एक नव्वाब साहब रहते हैं वे कई मर्तबः इस के निकाल ले जाने की कोशिश में थे सो हमारे नवाब साहब का शक उन्हीं पर होगा और यह गुमान मुतलक न होगा कि वह यहां से खुद बखुद निकल गई है।

मैंने कहा "यह निहायत अजीब बात है जैसी औरतों की अकल किस्से कहानियों में सुनता था वैसीही देखी, अल्लाह जानता है यह बात तो काबिल किताबों में दर्ज करने के है मगर अब बेफ़ायदा देर हो रही है"।

उस बुड्ढी ने कहा "तो आओ वह मुकाम यहां से चंद कदमों के फासले पर है"।

हम लोग जा कर खिड़की के नीचे खड़े हुये जहां रोशनी निहायत तेज़ थी, उस बुड्ढी ने वहां जाकर आहिस्ते से खखारा। उसके खखारते ही ज़ोहरा

खिड़की में आगई और आहिस्ते मुलायम आवाज़ से पूछने लगी "वे आ गये" उस की यह आवाज़ सुनते ही मेरा तमाम बदन सनसना उठा मगर मैं चुप चाप खड़ा था।

उसने कहा "हां वे तयार हैं बस अब देर करने का वक़्त नहीं है अल्लाह के वास्ते जल्दी करो"।

उसने कहा "बस मैं आई"।

मैने कहा "जल्दी करो वरना देर होने से शायद कोई देखले"।

इतना सुनकर वह फिर अंदर चली गई और थोड़ीही देर के बाद एक संदूक और एक गठड़ी ले आई जिन्हे उसने कपड़े से बांधकर लटकाया। हम लोगों ने उसे खोल लिया और उसने चादर को फिर ऊपर खीच लिया और बोली—"अब मैं आती हूं पर इस चद्दरे का क्या किया जाय क्योंकि इसे यहां बांधे बिना कैसे उतरूंगी"।

मैने कहा "तुम उतर आओ उसका बन्दोबस्त मैं कर लूंगा"।

उसने फौरन् चादर को खिड़की में मज़बूती से बांध दिया और बाहर छज्जे पर पैर धरा। मेरा कलेजा इस खौफ़ से धड़कने लगा कि कहीं वह गिर न पड़े तो उसे चोट भी लगे और हम सब पकड़े जांय। मैं और बद्रीनाथ दोनों खिड़की के नीचे खड़े हो गये कि अगर वह गिर पड़े तो उसे लोक लेवें। मगर इन सब की कुछ भी ज़रूरत न पड़ी वह फौरन पलक मारते से नीचे उतर आई और मैने उसे बड़ी मुहब्बत के साथ सीने से लगा लिया और कहा—

"तो अब इतना यह भी बाकी क्यों रह जाय" बस फौरन् चादर पकड़ कर ऊपर चढ़ गया; देखा तो कोठड़ी निहायत छोटी है और खून वगैरह के छिड़कने से यही मालूम पड़ता था कि यहां सख़्त मार पीट हुई है। कपड़े इधर उधर फैले पड़े हैं, छत और पलंग पर खून के दाग लग रहे हैं और पहिनने के पोशाक भी फटे फटाये कोने कतरे बिखरे पड़े हैं जिन से साफ़ झगड़ा होना मालूम पड़ता था। मै एक दम भी न ठहरा फौरन् चादर खोलकर फेंक दिया और नीचे कूद पड़ा। गोकि मुझे सख़्त चोट लगी मगर उस वक़्त

इसका कौन ख्याल करता है, हम लोग जल्दी से सलाह करने लगे कि किस फाटक से चलना चाहिये, बद्रीनाथ की सलाह हुई कि जिधर से हम लोग आये हैं उसी फाटक से बेहतर होगा। हम सब लोगों की सलाह इसके बरखिलाफ़ हुई सो उस बुड्ढे के कहने से हम लोगों ने दूसरे फाटक का रास्ता पकड़ा। रास्ते में हमें कोई न मिला और अल्लाह की बरकत से जब फाटक पर पहुंचे, देखते क्या हैं कि खिड़की खुली है और पहरेदार ढाल सिरहाने रक्खे सोया है और तलवार भी उसकी बगल में पड़ी है। हम लोग आहिस्ते २ उस के पास से गुज़र गये कि ऐसा न हो कि वह हमारे पैर की आहट से जाग उठे, और जब बाहर निकले तो दीवार के साये तले तेज़ होते हुये उस मैदान में पहुँचे जहाँ हमारा खेमा लगा था।

जब अपने सिपाहियों में पहुंचा जो अब तक जागते थे, ज़ोहरा जो हनोज़ मारे खौफ़ के मुझसे लिपटी थी गश खाकर गिर पड़ी। अब वहां पानी की क्या किल्लत थी, एक लहमे में एक घड़ा पानी आ पहुँचा और मैंने अपने हाथ से थोड़ा पानी उसके मुह पर छिड़का जिस्से उसे फिर होश आई और उसने आखें खोल दीं।

वह मेरे पैरों पर गिर पड़ी और बोली—"मै मारे खुशी के फूली न समाती थी और आज तीसरे पहर से कैसी पशोपेश में पड़ी थी कि आप से क्या कहूं कभी तो मैं इस बात पर खुश होती थी कि मैं इस कमबख़्त गुलामी से जल्द छुटकारा पाऊंगी और कभी जो घंटी को गिनती तो समझती कि रात ज़ादा चली गई शायद आप न आवें तो मेरा यह सब करना योंही बरबाद हो; अब जो मैं उस गुलामी से आज़ादी पाकर अपने तईं आप के साथ देखती हूं तो मेरा कलेजा मारे खुशी के गोया फटा जाता है"।

मैंने उसे उठा कर एक दरख़्त के तले बैठाया और गले में हाथ डाल प्यार करने लगा। बहुत देर तक तो हम दोनों चुपचाप चांदनी में अकेले बैठे थे, वह कुछ ख्याल कर रही थी और मैं उस के ख्याल के सिलसिले को हर्गिज़ तोड़ा न चाहता था"

साहब हम दोनों कितनी देर तक वहां बैठे थे मैं नहीं कह सकता— आखिरकार वह बुढ़िया आई और बोली, मेरे शहजादे, यह वक्त बोसोकिनार का नहीं है ज़रा इसे आराम करने दो और मैं समझती हूं कि अगर तुम पौ फटने के पेश्तर हमे यहां से रवाना कर दो तो हम लोग बेलाग निकल जांयगी और तुम हमारे पीछे आजाना"।

मैंने कहा "तुम सही कहती हो मैं अभी इसकी फ़िक्र करता हूं"।

किस्मतों से साहूकार की गाड़ी अभी तक फरोख़ न हुई थी और गोकि उसमें बहुत कुछ माल भरा था ताहम् इतनी जगह काफ़ी थी की दो औरतें बाआराम उस में बैठ जांय।

मैं फौरन् बद्रीनाथ के पास गया, देखा तो वह बसबब रात की थकावट के बेहोश नीद में पड़ा है, जब मैंने उसे फिर जगाया तो उसने समझ लिया कि शायद फिर कुछ उसकी ज़रूरत है।

उसने उठते ही कहा "कहिये मीर साहब! क्या हुक्म है मैं तैयार हूं?"

मैंने कहा "दोस्त बेशक मैने तुम्हें कच्ची नींद में जगाया और फिर तुम्हारी मदद इस बारे में चाहता हूं, क्यों कि अल्लाह जानता है कि मैं किस क़दर आप का ममनून वो मशकूर हूं"।

उसने कहा "दोस्त ऐसा न कहो मैं तुम्हारे लिये जी जान से हाज़िर हूं मुझे तो इसमे एक किस्म की दिल्लगी रहती है"।

मैने कहा "वह बुड्ढी यह सलाह देती है कि पौ फटने के पेश्तरही यहां से चल देना चाहिये, पस आप चंद लोगों को साथ ले कर अलस्सुबह यहां से रवाना होने के लिये तयार हो जाइये मैने उस साहूकार की गाड़ी तयार करली है पस कल तक आप ब आसानी आठ या दस कोस निकल जांयगे और इतनाही परसों भी; वहां पहुंच कर आप हमारे आने की राह देखियेगा। इस अर्से में आप बतौर सच्चे मुसलमान के उस की हिफ़ाजत और परदापोशी इस तौर से कीजियेगा जैसे किसी दोस्त का ज़नाना आपके सुपुर्द हो"।

उसने कहा "मैं समझ गया और अपना काम बाईमान अंजाम दूंगा, आप के हिदायत करने की कोई ज़रूरत नहीं है"।

मैंने कहा "मुझे आपका एतकाद है— बस अब कौन सा रास्ता लेना चाहिये। मैं सुनता हूं कि यहां से दो रास्ते हैदराबाद को जाते हैं"।

बद्रीनाथ ने कहा "सब्र कीजिये, मैं पीरखां को बुला लाता हूं वह सब रास्ते जानता है, वह भी तो अपने ही मेल का है"।

इतना कह कर वह पीरखां को ले आया और बोला "मैंने इसे सब समझा दिया है, अब यह जो कहता है सोभी सुन लीजिये"

पीरखां ने कहा "कि मेरी अर्ज़ यह है कि मैं दोनों रास्ते जानता हूं मगर पुख़ः तौर से नहीं, ताहम् मैं मीर साहब की सलाह को सबसे उमदा समझता हूं क्योंकि दूसरा रास्ता महज़ मनहूस और अकेला पड़ता है और उधर से बहुत कम मुसाफ़िर चलते हैं, और पीछा किये जाने के बारे में हम लोगों को अपनी खुशकिस्मती पर एतकाद रखना चाहिये जो यहां तक हमें वग़ैर किसी खौफ़ व ख़तरे के लाई है और इनशाअल्ला आगे भी ले चलेगी।

मैंने कहा "पीर खां, तुम हमारे रहनुमा हो, तुम्हीं फकत इन रास्तों को जानते हो पस मैं इतना ही कहता हूं कि अगर तुम तेज़री और ईमानदार रहोगे तो निर्मूल में मुलाकात होने पर मैं तुम्हें इनाम से खुश करूंगा"।

उसने कहा "मीर साहब खुदा आप के रहमत को रोज़ बरोज़ तरक्की करे, मगर इनाम की बात छोड़ कर आप जानतेही हैं कि हम लोगों में ऐसा कोई भी शख्स नहीं है जो आप के हुक्म पर अपना खून बहाने को तयार न हो। मगर आइये बद्रीनाथ! हम अपने लोगों को तयार करें"।

मैं अपने खेमें को लौट आया और देखा कि ज़ोहरा और बुढ़िया दोनों अपनी चादर ओढ़े बैठी आग ताप रही हैं जो उन्होंने फूसफास से बाल रक्खी थी। मैंने मुख़्तसर में उन्हें वहां से रवाना हो जाने की ज़रूरत समझा दी और कहा "मुझे निहायत अफ़सोस है कि इस वक़्त मैं तुम्हारे हमराह नहीं चल सकता क्योंकि हम लोगों ने इस बारे में मशवरत की थी पस यही सलाह ठहरी कि दोनों की मुहाफ़ज़त के लिये इस वक़्त हम लोगों का इलाहिदा हो जाना ही वाजिब है। अल्ला जो मेरे दिल को देखता है, जानता है कि जब तक मैं तुम से जुदा रहूंगा किस क़दर फ़ुरक़त के नाले खींचता रहूंगा, क्योंकि

उसी वक़ से जब मैंने तुम्हें पहिली मर्तबः दरबार में देखा था मेरा दिल तुम्हारी खूबसूरती के बाइस हाथ से जाता रहा, पस जैसी मायूसी मुझे उस वक़ इस बात के लिये थी कि तुम हर्गिज़ मेरी नहीं हो सकती वैसा ही रंज मुझे इस वक़ तुम से जुदा होने का है"।

कुछ देर तक तो वह खामोश थी, आखिरकार बुरका हटा और अपना चांद सा मुखड़ा दिखला मेरा हाथ पकड़ कर बोली "मुझे अब अपने लिये कुछ भी खौफ़ नहीं, मगर फकत तुम्हारा खतरा है, मैं बगैर उज्र जाती हूं क्योंकि मैं खुद देखती हूं कि इस वक़ हमें जुदा हो जाना किस क़दर ज़रूर है, मगर प्यारे मुझ से इकरार करो कि तुम अर्से तक मुझ से जुदाई का दम न भरोगे बस मेरी खातिर इतने ही में हो जायगी"।

मैंने कहा "बस हद दो रोज़ है, कल शाम या परसों सुबह को हम यहां से रवाना होंगे और जहां एक मर्तबः चले कि मैं फौरन् आगे आकर तुम से मिलूंगा मेरे वालिद और दूसरे लोग आहिस्ते २ पीछे आते रहेंगे"।

उस बुड्ढी ने पूछा "तो हम लोग किस रास्ते जांय ?"

मैंने कहा "निर्मल से, चूंकि वह रास्ते से बाहर है इसी लिये हम लोगों ने उसे पसन्द किया, यह अगलब नहीं कि नव्वाब साहब के लोग अगर कोई तलाश में निकलें भी तो उस तरफ का रास्ता लें।

उसने कहा "आप बजा कहते हैं वे उस तरफ हर्गिज़ न आवेंगे"—मगर मैं ज़रा कल उस की शकल देखने पाती जब उसे इस मैना के उड़ जाने की खबर मालूम होगी"।

मैंने कहा "मैं क्या परवाह करता हूं, मगर जब इस की शुहरत फैलेगी तो मैं शहर में जाऊंगा और तमाम खबर तुम्हें आकर मिलने पर सुनाऊंगा।

बद्रीनाथ ने कहा "तो अब मुझे रुखसत कीजिये, इस दर्मियान में मेरा नाम जमाल खां याद रखिये और इसी नाम से रास्ते में मुझे दर्याफ़ कीजियेगा"।

मैंने कहा "दोस्त खुदा पर्वर्दिगार है, मेरी तबीयत चाहती है कि अब भी मैं तुम्हारे साथ चलता"।

दोनों फौरन् तयार हो गईं और मैंने उन्हें बाआराम गाड़ी पर सवार करा दिया।

बद्रीनाथ ने कहा "तो अब मैं रवाना होता हूं—हांको गाड़ी, और तुम लोगों में से चंद लोग गाड़ी के चौगिर्द पास ही पास चले चलो जैसे किसी इज़्ज़तदार रईस का जनाना हो"।

मैंने कहा "अल्ला हाफ़िज़ है!—रसूलल्लाह मददगार है!"। वे रवाना हो गये और मैं तब तक खड़ा उन्हें देखता था जब तक वे मोड़ पर मेरे नज़रों से गायब न हुये बादज़ां मैं अपने खेमें को लौट आया और बसबब थकने के जल्द सो गया।

सुबह को मेरे वालिद ने खेमे में आकर मुझे जगाया; तमाम रात बाहर रहने के बाइस वे मुझ से कुछ नाराज़ थे उन्होंने कहा कि "गोकि तुम किसी नाकिस काम से न गये हो तोभी वह कार जिसमें तुम तमाम शब मशगूल थे लाहासिल व बेफायदा था। अब नमाज़ का वक़्त है इस के बाद मैं सुनूंगा कि तुम क्या करते थे"। मैं उनके साथ २ गया और बाद नमाज़ खतम करने के उन्होंने मुझे अपने पास बैठा कर कहा कि रात का अहवाल मुफस्सल बयान करो"।

मैंने शब का तमाम माजरा कह सुनाया और जानता था कि अब मुझे सख़्त लानत मलामत व नसीहत होगी। मगर नहीं, मेरा तमाम अहवाल सुनने पर वे खूब कहकहा मार कर हँसे और जोहरा के रवाना कर देने की होशियारी के लिये हम लोगों की तारीफ़ करने लगे।

आफ़ताब रोशन न हुआ था कि शहर में जोहरा के निकाले जाने की शुहरत फैल गई। सैकड़ों हज़ारों शख्स वहां दौड़ पड़े और गरोह के गरोह फाटक के बाहर जमा होकर मशवरा करने लगे, उन की शकल और खेमे की तरफ़ इशारा करने से उनका शुबहा साफ़ हम्हीं लोगों पर मालूम होता था; और जैसा कि हमने पेश्तरही गुमान किया था अनकरीब २० सवार और कुछ पैदल सिपाही नज़दीकही के फाटक से निकल कर हमारे खेमे के पास आये और उसे चारों तरफ से घेर लिया। एक या दो शख्स जो उनमें सरदार थे

मेरे पास आये और तेज़ होकर पूछने लगे कि इस खेमे का मालिक व अफ़सर कहां है ?

मैंने अपने वालिद को पेश्तर ही समझा दिया था कि आप अपनी तईं सौदागर और मुझे सिपाहियों का जमादार बतलाइयेगा और चूंकि उन्हें भी मालूम था कि मैंने नवाब साहब के दरबार में भी यही ज़ाहिर किया था वे मेरे कहने से खबरदार थे ।

मैंने कहा "यही बन्दा इन लोगों का अफ़सर है कहिये आज अलस्सुबह नवाब साहब का क्या फ़र्मान् है ? क्या मेरे लिये कोई ऐसी खिदमत है कि मैं उसे बजा लाने से हुजूर मे यह रौशन करूं कि हुज़ूर की मेहरबानी का मैं किस कदर ममनून व मशकूर हूं"।

उसने तेजमिज़ाजी से कहा कि "जब तक आप के खेमे की तलाशी न हो लेवे तब तक आप को यहां नज़रबन्द रहना होगा, एक अजीब वारदात हो गई है और उसका शुबहा आपही लोगों पर है"।

मैंने यकबयक हैरत में आकर कहा "क्या ? हमलोगों पर किस बात का शुबहा है ? खेमा हाज़िर है आप बेशक तलाशी ले लीजिये। शायद आप के शहर में कुछ डाका पड़ा है और इसमें कोई ताजुब नहीं कि इस वहशी और बदखुल्क मुल्क में इज्जतदारों और रईसों पर शुबहा किया जाय"।

"चुप रहो" उस शख्स ने कहा "हमलोग अपना फर्ज अदा करते हैं मैं सब से औव्वल इस बात से निहायत खुश होऊँगा कि जैसे आप दिखलाई पड़ते हैं वैसेही आप ने नव्वाब साहब के मेहमानदारी का एवज़ हर्गिज़ दगाबाज़ी से न अदा किया होगा"।

मैंने कहा "अब मैं क्या कहूं आप के इस कलाम पर मुझे निहायत ताज्जुब होता है, खैर आप इस मुकाम को बखूबी तलाश कर लिजीये और बादहूं बराय मेहरबानी बतलाइये कि यह क्या भेद है"।

वह मेरे हमराह होकर खेमे के नजदीक आया और घोड़े से उतर कर मुझे और दो तीन अपने सिपाहियों को लेकर अन्दर वारिद हुआ, वहां क्या था दो एक दरी और चटाइयां एक कोने में बिछी थीं कुछ खाने पकाने के बरतन और चंद गठड़िया दूसरे गोशे में पड़ी थीं।

नवाब साहब के उस सवार ने जिसका नाम अज़ीम खां था कहा "यहां तो वह नहीं है चलो दूसरे खेमे को तलाश करें"।

मैं उनके साथ २ चला और वालिद के खेमे के पास पहुंचा। मैंने उन्हें झुक कर सलाम किया और कहा चूंकि नवाब साहब के लोग आपके खेमे की भी तलाशी लिया चाहते हैं जैसे कि वे मेरे खेमें को देख चुके हैं बेहतर है कि आप इस में कुछ उज्र न करें वरना नवाब साहब को दरहकीकत हम पर शक करने की जगह होगी"।

वालिद ने कहा "हर्गिज़ नहीं, यह खेमा हाज़िर है मैं नवाब साहब का गुलाम हूं, यह अगलब नहीं कि मुझ जैसा ज़ईफ़ शख्स यहां औरतों को छिपा रक्खे"।

पस मेरेही मानिन्द उनका खेमा भी तलाश किया गया और बादज़ां दूसरे लोगों का भी डेरा देख भाल लिया गया मगर वहां क्या मिलना था आखिर कार वे सब मायूस हो गये और अज़ीमखां ने अपने सरदार से कहा--"मैं आप से वहां पेश्तरही कहता था कि यहां वह हर्गिज़ न होगी, मेरे कहने पर एतकाद रखिये, मैंने वहीं नवाब साहब से अर्ज़ कर दिया था कि यह उसी बदमाश शेफीखां का काम है, हम सब जानते है कि वह नरसी के हाकिम का नौकर है जो उसको निकाला चाहता था, बेहतर हैं कि हम लोग यहां फ़ज़ूल वक़्त न खराब कर उसके पीछे जावें"।

मैंने कहा "क्या कहा? एक लड़की का मामला है! अल्लाह के वास्ते ज़रा मुझे समझाइये तो कि यह क्या भेद है"। मैंने उस अफसर से कहा "तुम्हारे सिर की कसम, मुझे यह अजीब माजरा दिखलाई पड़ता है बल्कि मुझे इस बात पर हँसी आती है कि फ़कत एक अदना लड़की के लिये मेरा खेमा तलाश किया जाय—मै ख्याल करता हूं कि कोई लौंडी होगी जो अज़खुद निकल गई हो या कोई उसका आशना उसे निकाल ले गया हो खुदा के वास्ते साहबो कहिये तो क्या हुआ?"।

सरदार ने कहा "शायद आपकी तबीयत हँसने की करती हो मगर हम लोगों के लिये यह कोई हँसी की बात नहीं है—आप अपने लोगों को ज़रा हटा दीजिये तो मैं तमाम किस्सा आप को कह सुनाऊं"।

मैने अपनी लोगों को जो तमाम जमा हो गये थे डाँट कर कहा "हट जाओ, यह बात काबिल तुम लोगों के सुनने के नहीं हैं। और सब के सब हट गये।

उसने कहा "माजरा यह है कि नवाब साहब के जनानखाने में एक तवायफ़ निहायत खूबसूरत वो परीज़ाद और इल्म की पूरी कल रात तक थी। मगर आज अलस्सुबह जो देखा गया तो उसका कमरा खाली है और उसके पलङ्ग के चारो तरफ़ खून के निशानात पाये जाते हैं उसके सिर के बाल और पहिनने के कपड़े भी खून आलूदा कमरे में बिखरे पड़े हैं। रात को किसी तरह का शोर वो गुल या हंगामा भी नहीं हुआ और फाटकों पर साबिक दस्तूर पहरा था और वे तमाम रात बन्द थे। हमे तो यह शैतान का काम जान पड़ता है कि ऐसी वारदात हो गई, हम नहीं कह सकते कि कौन हमारी दाढ़ी पर खाक डाल गया। नव्वाब साहब गुस्से में लाल होकर दीवानों के मानिन्द खफ़ा हो रहे हैं तमाम जनानखाने मे वाएवेला मचा है, और सब से भारी आफ़त तो यह है कि उनका सख्त हुक्म है कि अगर तीन दिन के अन्दर वह लाई न जावेगी या उसका पता न लगेगा तो तुम सब नौकरी से बर्तरफ़ करदिये जाओगे"।

मैं और मेरे वालिद दोनों ने कहा "खुदा की रहमत ! यह जाये—ताज्जुब है। क्या आप को किसी पर शक शुबहा नहीं है कि किसने यह गुस्ताखी और कारर्वाई नागहानी की है"।

उस ने कहा "पहिले तो आप लोगों हीं पर शक हुआ था क्योंकि आप का गरोह ज़ादा है और आप लोग मुसाफिर हैं इस लिये हमलोगों को हुक्म हुआ कि आपकी खानातलाशी की जाय मगर यहां तो हम लोग सिवाय असबाब व गठरियों के और कुछ नहीं पावे, और दरहकीकत आपलोग ऐसे शख्स नहीं हैं कि उसे निकालें क्योंकि मैं ख्याल करता हूं कि शायद आपने उसे देखा भी न होगा"।

मैने कहा "मैं ख्याल करता हूं कि वह उन्हीं मे से कोई तवायफ़ होगी

जो उस दिन दरबार में हाजिर थीं जब मैं नवाब साहब की कदमबोसी के लिये गया था"।

उसने कहा "शायद"—"क्या वे देखने में कुछ खूबसूरत थी"?

मैंने कहा "हां, एक तो उन में से कुछ लम्बी और गोरी थी और दूसरी कुछ नाटी थी, गोकि वह इतनी गोरी तो न थी ताहम् निहायत हसीन थी। उसने कहा "बस वही लड़की है, मैंने भी उसे दो एक मर्तबः जब कभी अब को दरबार में जाना हुआ, तो देखा है"। "मगर हमलोग नाहक फ़जूल यहां वक्त खराब कर रहे हैं। आप लोग एतकाद रखिए कि हमें किसी तरह का शक वो शुबहा आप लोगों पर नहीं है"।

मैंने कहा "उम्मेद है कि आप लोगों के इस उमदे ख्याल का उमदा असर हो मगर मेरी यह इल्तिजा है कि आप हमारी तरफ़ से नवाब साहब की गमखुारी और हमदर्दी ज़ाहिर कीजियेगा और कहियेगा कि अगर हुक्म हो तो हम लोग खुद हुजूर में हाज़िर हों"।

उसने कहा "बेशक मैं अर्ज़ कर दूंगा मगर मैं ख्याल करता हूं कि शायद आपको हुजूर न बुलावें क्योंकि इस वक्त उन्हें निहायत रंज है, कुछ उस लड़की के निकलजाने का चंदा अफसोस नहीं हैं मगर इस बेइज्ज़ती पर ज़ादा सदमा और ख्याल है अब मैं रुखसत होता हूं।

वह तो सलाम कर रवाना हुआ, और थोड़े ही अर्से के बाद एक नौकर नव्वाब साहब का कुछ फल और मेवे लेकर आया और बोला कि नवाब साहब ने आप लोगों के लिये यह सौग़ात भेजी है और फर्माया है कि मुझे निहायत अफ़सोस है कि मैं इस वक्त आप लोगों की मुलाकात नहीं कर सकता और मुझे इस बात का सख्त रंज है कि बसबब ज़रूरी अम्र के आपका खेमा तलाश किया गया। हम लोगों ने उसे कुछ इनाम देकर रवाना किया और दुबारा अपनी हमदर्दी ज़ाहिर की। उसने कहा कि मैं नवाब साहब से अर्ज कर दूंगा। मैंने वालिद से कहा कि अब यह मुकाम हमलोगों के ठहरने काबिल नहीं है, फ़ौरन् यहां से रवाना होना चाहिये। आज सिपहर की रवान-

गी के बारे में आप की क्या सलाह है? उनने कहा" बेहतर है, लोगों से कह दो कि वे तयारी करें"।

तीसरे पहर हमलोग निर्मूल को रवाना हुये और चूंकि नवाब साहब या उनके तकलीफ़ का हाल फिर कुछ न पाया हमलोगों का खतरा तमाम जाता रहा मगर नव्वाब साहब के नौकरों के जाने के बाद जब तक हम लोग उस शहर में रहे तब तक बराबर इस बात का खौफ़ था कि किसी तरह हमलोगों का राज़ ज़ाहिर न हो जाय। कहीं वह भठियारा हम लोगों का हाल न कह दे गोकि वह हमारा इरादा न जानता था ताहम् उसके साथ हमारा रहना और उसी शब ज़ोहरा का गायब हो जाना काफ़ी था कि उसे इस बात का शक दिलावे कि शायद हमलोग उसे निकाल ले गये हों। उसे हमलोगों की गुफ्तगू से इतना तो मालूम होगया था कि हमलोग किसी औरत के फ़िराक़ में लगे थे। मगर किस्मतों से ऐसी कोई बात न हुई और जमरखेर से रवाना होने के तीसरे दिन हम लोग निर्मूल पहुंच गये।

शहर में दाखिल होतेही मैंने देखा कि बद्रीनाथ सड़क की तरफ पीठ किये एक दूकान में बैठा किसी मुअज्जिज शख्स से बातें कर रहा है जो देखने से मुसलमान मालूम पड़ता था। उसने मुझे न देखा मगर जब मैंने उसे जमाल खां के नाम से पुकारा तो वह फौरन् उठ खड़ा हुआ और मुझे घोड़े से उतार बगलगीर हो गया।

मैंने आहिस्ते से ताकि वह दूसरा शख्स न सुन सके पूछा "कहिये सब खैरियत है न?"

उसने जवाब दिया "हां किसी बात का ख़तरा नहीं है मगर वह तुम्हारे देखने के लिये निहायत बेचैन है"।

साहब, मैं फौरन् जोहरा के पास पहुंचा और जातेही उसे फिर सीने से लगा लिया। वह मुझ से निहायत मुहब्बत से मिली और बादजां चंद मामूली शिकायतों के जो ब सबब मेरे देर के हुई थी उसने रास्ते की तमाम कैफीयत और सफर की थकावट बयान की। इसके बाद हमलोग बड़ी मुहब्बत से बातें और प्यार करने लगे जो फक़त वेही लोग जानते हैं जिन्हें कभी ऐसे

खौफो-खतर के मौके पर माशूका की जुदाई का सदमा दिल पर पहुंचा हो। कुछ देर तक उस्से योंहीं बातें करके मैं फिर बद्रीनाथ से आकर मिला और पूछा कि यह कौन शख्स था।

उसने कहा कि "जहां तक मैं उसकी बातों से दरियाफ़ कर सका मुझे मालूम होता है कि उसे किसी निहायत जरूरी सबब से यहां का रहना खतरनाक मालूम होता है और वह फौरन् रवाना हुआ चाहता है मुद्दा यह कि उसने कुछ सरकारी रुपया हजम कर लिया है और उसकी मुहाफ़जत यहां से भागजाने ही में है। मैंने उस्से कहा है कि आप अपने साथियों के साथ आने वाले हैं अगर तुमारी खुशी हो तो हमलोगों के साथ निकल चलने का अच्छा मौका है। फिर बद्रीनाथ ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा कि आप जानते ही हैं कि "जहां एक मर्तबः कोई शख्स मेरी निगाह पर चढ़ गया फिर मैं उसे हर्गिज हाथ से जाने नहीं देता, बस अब इस शख्स को ज़रूर लेना चाहिये, औव्वल इसलिये जो मैं आप से बयान कर चुका हूं और दोयमश उसके पास कुछ माल भी मालूम पड़ता है, क्यों समझे न" ?

मैंने हँस कर कहा "हां खूब समझता हूं आप की बातें अजीब हैं मैं दिलोजान से आप का मददगार हूं। खैर तो अब क्या करना चाहिये"।

बद्रीनाथ ने कहा।" अभी यह कहना मुश्किल है क्योंकि मैं नहीं जानता कि वह कहां रहता है, लेकिन उसने मुझसे इकरार किया है कि वह जलद आवेगा और मैं कह सकता हूं कि उसे देर न लगेगी।। मैने कहा "खैर तो उसके आने तक हमलोग सब्र करें मगर तब तक मैं कुछ खाना क्यों न खालूं"।

साहब मैं परदे के अन्दर चला गया और वहां जोहरा के साथ निहायत उमदा लज़ीज़ खाना गर्मागर्म खा रहा था कि मैंने बद्रीनाथ और उस शख्स से साहब सलामत होते सुनी जब मैं खा कर सेर हुआ फौरन हाथ मुंह धोकर उनमें आ शरीक हुआ।

बद्रीनाथ ने मेरी तरफ इशारा करके कहा यही मेरे भाई हैं जिनके बारे में मैने आप से कहा था, चूंकि अब येभी आगये तो हम लोग यहां से एक

साथ ही रवाना होंगे। इनके तमाम लोग बाहर खेमे में हैं पर चूंकि इन्हें मेरे साथ आराम रहता है इसलिये यहां चले आये हैं"।

मुझ से और उस से साहब सलामत हुई मैंने उसका ख्याल उसी तरफ़ लाने के लिये बद्रीनाथ से पूछा कि कब रवाना होना चाहिये और कहा—

"नरसी में हम लोगों का ठहरना महज़ बे मोका हुआ वरना अब तक तो हम लोग दूर निकल गये होते"।

उसने बगौर मेरी तरफ देखा और बद्रीनाथ से कहा "शायद आप कुछ दिल्लगी करते हैं जो आप इन्हें अपना भाई बतलाते हैं, आप की उमर तो इन से कहीं ज्यादा है मासिवाय इस के आप लोगों की शकल में कुछ भी मुसाबिहत नहीं पाई जाती"।

उसने कहा "हम लोग हकीकी भाई नहीं हैं बल्कि रिश्ते में बिरादर लगते हैं आप जानतेहो हैं कि चचेरे भाई को भी भाई ही कह कर पुकारते हैं"।

उसने पूछा "तो यह क्यों कर हुआ कि ये छोटे हो कर भी आप लोगों के जमादार हैं और आप बड़े हो कर जमादारी के उहदे पर नहीं हैं?"

बद्रीनाथ ने कहा "इस का क़िस्सा निहायत तूल व तवील है आप सुनते सुनते उखता जांयगे, बस इतना ही कहना काफ़ी है कि ये हमारे वालिद के बड़े भाई के लड़के हैं जिन की शादी मेरे वालिद के शादी के बहुत रोज बाद हुई थी, यह उन की दूसरी शादी थी पहिली बीबी उन की लावलद फौत हो गई थी, पस सब लोगों की व मेरी सलाह से येही जमादार मुकर्रर किये गये लेकिन मैं इन्हें अकसर अपनी नेक सलाह दिया करता हूं"।

मैंने अपनी शकल ऐसी बना ली गोया मैं अपने उस ओहदे की तारीफ़ सुन कर शर्मिन्दा हो गया हूं तो भी मैंने ऐसा ज़ाहिर किया कि मैं बगैर अपने भाई के सलाह के कोई काम नहीं कर सक्ता।

उसने कहा "आप के मुल्क का अजब दस्तूर है सभी बातों में फ़र्क़ है। यहां इसका ठीक बरखश होता है—खैर तो जमादार साहब मैं ख्याल करता हूं कि आप के भाई साहब ने मेरे बारे में बेशक आप से सब अहवाल कह दिया होगा"।

...ाप ने उन से कहा है उतना तो बेशक उन्हों
...हम दोनों शख्स इस वक्त यहां मौजूद हैं आप
...हना हो बेशक इर्शाद फर्मावें"।

... अब अौव्वल से कहने की कोई जरूरत नहीं है बस
...ी है कि किसी सबब से मुझे यहां से हैदराबाद चले
...त है, वहां मैं अपने दुश्मनों से महफूज रहूंगा। इसलिये
... कि अगर आप रास्ते में मेरी हिफ़ाजत और पोशीदगी का
... मैं आप के साथ हैदराबाद तक चलूं"।

...हा "हां मैं इसके लिये तयार हूं मगर हमें भी तो इसमें खतरा है,
...ासिवाय मुहाफजत् और पोशीदगी के अगर मौका पड़ जायगा तो
...मनों का मुकाबिला भी करना पड़ेगा, पस इन सब के लिये कुछ मु-
...वजा बेशक होना चाहिये"।

उसने कहा "बेशक मैंभी यह काम कुछ मुफ़ में नहीं चाहता इस लिये आप ही अपने शर्तों को बयान कीजिये"।

मैने कहा "मैं देखता हूं कि आप फैयाज़ हैं और इनशाअल्ला आप भी हम लोगों को ऐसाही पाइयेगा। शायद १५०) इसका मेहन्ताना आप ज़ायद न समझेंगे"।

उसने कहा "नहीं, निस्फ़ तो मैं आप को इसी वक्त दे देता हूं और बाकी पहुंचने पर दूंगा"।

मैने कहा "मंजूर है, बस इतना काफ़ी है, अब यह फर्माइये कि आप सफ़र में क्यों कर चला चाहते हैं। अगर मुझे हुक्म हो तो मैं वह तरीका बतला दूं कि आपका चलना हर्गिज़ किसी को मालूम न हो"।

उसने बड़े इश्तियाक से पूछा "कहिये वह क्या तरकीब है?"

मैने कहा कि "आप एक गाड़ी या तो खरीद लीजिये या किराये पर कर लीजिये और चंद मंज़िलों तक उसी में सफ़र कीजिये, मेरे भाई के साथ ज़नाना है, मुम्किन् नहीं कि कोई शख्स उस गाड़ी की तलाशी करे जिसमें ज़नानी सवारी है"।

उसने कहा "अल्ला जानता है यह खूब उम्दा तद्‌बीर है, ताज्जुब है कि मुझे ऐसा ख्याल न हुआ था। मगर मैं जो गाड़ी की तलाश में जाऊंगा तो मेरे भागने का हाल ज़ाहिर हो जायगा"—

बद्रीनाथ ने कहा "आपको तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत है मुझे रुपया दे दीजिये—सौ रुपया बहुत है—और मैं जाकर गाड़ी खरीद लाता हूं, जो कुछ बचेगा आप को हिसाब समझा दूंगा"।

उसने कहा "मेरे ऊंट, घोड़े और नौकर? उनका क्या बन्दोबस्त होगा?"

मैंने पूछा "वे कितने हैं?"

उसने कहा "दो ऊँट और दो घोड़े हैं, और तीन या चार नौकर भी हैं जिन्हें मैं अपने साथ ले जाया चाहता हूं"।

मैंने कहा "तो उन सभों को आज शब को मेरे खेमे में भेज दीजिये, उन्हें कोई न देखेगा और अगर ज़रूरत होगी तो वे पेश्तर रवाने कर दिये जायंगे।"

उसने कहा "आप लोग बड़े तेज़फ़हम हैं जिस तर्कीब के ख्याल में मैं शबो रोज़ गलताँ रहता था उसे आप लोगों ने आनन् फानन् में निकाल लिया, अब मैं देखता हूं कि फ़जूल वक़्त जाया करने का मौका नहीं है, पस अब मैं रुपया लाने और अपने लोगों को तयार होने की हिदायत करने जाता हूं" इतना कह कर वह हमसे रुखसत हुआ।

बद्रीनाथ ने मुझे कहा "शाबश आपने मेरे इशारे को खूब समझा; मछली ने चारा धर लिया है"।

मैंने कहा "मैं भी यही ख्याल करता हूं, चाहे वह शख्स तहसीली में निहायत होशियार हो मगर मुझे या आप को हर्गिज़ नहीं पा सकता, आप देखतेही हैं कि जितना हमलोगों ने उसे ख्याल किया था उससे वह कहीं ज़ादा अमीर है क्योंकि वह अपने घोड़े शुतर और नौकरों का ज़िक्र करता था। इसमें कोई शक नहीं कि इससे गहिरा माल हाथ लगेगा"।

मैं बद्रीनाथ को वहीं छोड़ कर फौरन् वालिद के पास पहुंचा, मगर जाते वक्त उससे कह गया कि अगर मेरे आने के पेश्तर वह शख्स आ जावे तो आप उसका बन्दोबस्त कर रखियेगा।

वालिद मुझे देख कर हैरत में आ बोले "मुझे तो तेरे जल्द लौटने की कोई उम्मेद न थी, कहो आने क्या सबब है" ?

मैंने कहा "जी उसकी क्या ज़िक्र है मैं बसबब एक ज़रूरी काम के आप के पास आया हूं"।

उनने कहा "हां, अच्छा कह फर्जन्द क्या काम है ?"

मैंने कहा " शहर में मैं और बद्रीनाथ दोनों ने एक गहिरा असामी हाथ किया है जो पेश्तरवालों से किसी तरह कम नहीं मालूम पड़ता, अगर आज शाम को दो घोड़े, चन्द शुतर और नौकर खेमे में आवें तो आप उन्हें बाआराम डेरा दीजियेगा और कल शुबह को जितना जल्द हो सके हैदराबाद की तरफ़ रवाना कर दीजियेगा"।

वालिद ने कहा "बहुत अच्छा, मगर अमीर! यह तो कह कि इसमें किसी तरह का खतरा या जोखिम तो नहीं है ?"

मैंने कहा "जी जहां तक मैं देखता हूं इसमें कोई खतरे का मुकाम नहीं है, जो कुछ हमलोगों ने किया है उसे सुन लीजिये तो आप को खुद मालूम हो जायगा कि इस मामले को हाथ में लेना चाहिए या नहीं। अगर आप को नापसन्द होगा तो हमलोग इसे छोड़ देंगे"। इतना कह कर मैंने तमाम अहवाल उन्हें मुफ़स्सल सुना दिया।

उनने कहा "तुम दोनों अपना काम उमदगी के साथ करते हो। मैं तुम्हारी काररवाई पसन्द करता हूं, मैं घोड़े और शुतर वगैरह को बाआराम जगह दूंगा और आजही शबको कबर खोदनेवालों को भी रवानगी का हुक्म दिया जायगा। कल शुबह या शाम को हमलोग भी रवाना हो जांयगे।

मैं कुछ देर वहां ठहर कर फिर शहर को वापस आया, देखा तो बद्रीनाथ मकान पर नहीं है। मुझे उसके लिये शाम तक वहां ठहरना पड़ा मगर मैं इस अरसे में अपनी माशूका से दिल बहलाता था और वक्त का गुज़रना कुछ भी मालूम न हुआ। उसके वापस आने पर, मैं उसके साथ एक गाड़ी और दो बैल देख कर निहायत खुश हुआ। चूंकि यह सब सामान उसने एक त-

वायफ़ से खरीदा था इसलिये इस गाड़ी में परदा वगैरह काबिल औरतों की सवारी के तमाम दुरुस्त था।

जब गाड़ी मकान पर पहुंची बद्रीनाथ ने हांकनेवालों को दो चार आने देकर रवाना कर दिया और मुझ से कहा—

"यह पंचानबे रुपये की खरीद है, सौदा सस्ता हुआ न? अब फ़कत इसके सवारी को फिक्र करना चाहिए।

मैंने पूछा "वह कहां है? क्या आप को पूरा एतकाद है कि वह चलेगा? बद्रीनाथ ने जवाब दिया "मुझे पूरा एतकाद है, वह यहां के हाकिम से इस बहाने पर रुखसत लेने गया है कि वह अपना तमाम काम कर चुका। उसने अपने शुतर और नौकरों को यह सख्त हुक्म देकर हमारे खेमे में भेज दिया है कि वहां का अफ़सर जो हुक्म दे उसकी तामील करना, और मैंने खुद उन्हें आप के वालिद के पास भेज कर यह समझा दिया है कि तुम लोगों को जो कुछ करना होगा वे बतलावेंगे। वह शख्स खुद आधी आधीरात को यहां आवेगा।"

मैंने कहा "इनशाअल्ला हमलोग दरहकीजत किस्मतवर हैं देखिये सभी बातें दुरुस्त दिखलाई पड़ती हैं।"

हमलोगों ने ज्योंही अपनी तमाम तयारी खतम की कि हमारा वह दोस्त आ गया। उस वक्त रात भी निहयात तारीक थी पस उसे आते किसी ने न देखा, और चूंकि हमलोगों ने गाड़ी खरीदे जाने की खबर उसे भिजवा दी थी वह अपने साथ तमाम बेशकीमती असबाब भी लेता आया। एक नौकर के सिर पर एक गठड़ी निहायत मजबूती से मोमजामे में बँधी थी और उस का बिस्तरा और हुक्का भी साथही था।

उसने आतेही पूछा "कोई चीज़ छूट तो नहीं गई"?

मैंने कहा "जी नहीं सब तयार है फ़कत आपही के आने की देर थी मैं खुद फाटक पर गया था और पहरेवाले से कह आया हूं कि चूंकि हमें मंज़िल दूर दराज ते करना है इसलिये आधी रात के कुछ देर बाद हम मय दो गाड़ी और अपने लोगों के इधर से गुज़रेंगे।

उसने कहा "बेहतर है—अच्छा यह रुपये लीजिये।" और उसने हमें ७५ रुपये गिन दिये।

मैंने कहा 'बस अब किसी बात की ज़रूरत नहीं। मगर अभी तक आप ने अपना इस्मशरीफ़ मुझे न बतलाया बराह मेहरबानी उससे भी आगाह कीजिये"।

उसने जवाब दिया "तो हाल में आप मुझे कमाल खां के नाम से पुकारिये अपना असली नाम हैदराबाद पहुंचने पर बतलाऊंगा"।

मैंने कहा जैसी आप की मर्ज़ी, बेशक असली नाम ज़ाहिर न करने का सबब आप का वाजिब है। इस अर्से में जैसा आप ने इर्शाद किया कमाल खां के नाम से काम चल जायगा; पस तो खां साहिब जितना जल्द हमलोग इस वक़्त आराम कर लेंगे उतनाही शुबह कल सफ़र करने के लिये तरोताज़ा रहेंगे"।

उसने कहा "मेरा क्या मैं कहीं पड़ रहूंगा, और आज मुझे नींद भी खूब आवेगी क्योंकि इधर कई दिनों से बसबब फ़िक्र वो परेशानी के मेरी आंख तक न झपकी"।

उसने अपनी दरी बिछाई और दुपट्टा तान सो रहा। बद्रीनाथ भी उसी के पास लेट रहा और थोड़ीही देर में दोनों नींद में बेहोश होकर धुर्राटे मारने लगे"।

मैंने कहा "वाह रे किस्मत! एक तरफ़ तो वह शख्स पड़ा है जो चन्द घण्टों के बाद इस दुनियांयेफ़ानी से कूंच कर जायगा और उसी के बगल में उसका मारनेवाला दोनों बाआराम सोये हैं, अफ़सोस कि थोड़ीही देर बाद इन दोनों की हालत तबदील हो जायगी, एक तो हमेशा के लिये बेखब्र होकर ज़मीन के अन्दर आराम करेगा और दूसरा जीता रह कर फिर नये शिकारों के तालाश में घूमता फिरेगा! या अल्लाह तेरी मर्ज़ी कौन जान सकता है"!!!।

इसी ख्याल में मैं भी सो गया। ठीक मुऐअन् वक़्त पर कमाल खां के आदमियों ने हमें जगाया और फौरन् रवानगी की तैयारी हो गई, मैंने जो-